RNI No. 7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 61 अंक : 07 प्रकाशन तिथि : 25 जून कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 जुलाई 2024
शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

पृथ्वीराज राठौड़

हरि ! जेम हलाड़ो तिम हालीजै,
कांय धण्यां सूं जोर क्रिपाळ।
मोळी देवो, देवो छत्र माथै ,
देवो सो लेऊं स दयाळ ।।

'पीथल'

जन्म :– 06 नवंबर 1549
(विक्रम संवत 1606, मार्गशीर्ष वदि 01)

स्वर्गवास – सन 1600
(विक्रम संवत 1657)

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

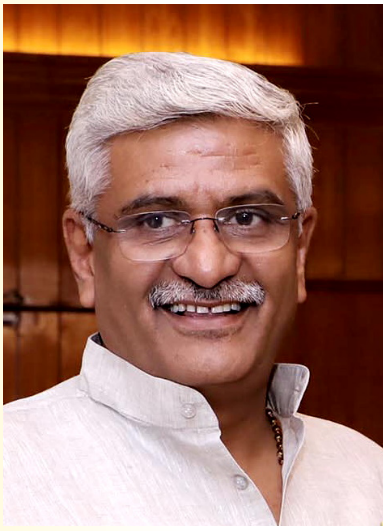

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत

(महरोली) को भारत सरकार में

केद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु :

छोटू सिंह मसूरिया, भगवत सिंह करडा, दिनेश सिंह भनोखर, रूप सिंह बिर्कोंद्री
विक्रमसिंह मिर्गानेणी, जबर सिंह भिंयाड़, नरेंद्र सिंह रॉयल , भौम सिंह तिबनियार
राण सिंह म्याजलार, महिपाल सिंह अवानिया, छत्रपाल सिंह आबला, हरदीप सिंह कोढ़
पृथ्वी सिंह गुसाईंसर, महेंद्र सिंह चौरड़ियाँ, महेशदान मूँजासर , रामस्वरूप सिंह हुडास
सज्जन सिंह बाणियाखेड़ा, भोजराज सिंह भँवरलाई, दयाल सिंह रातरना, मिठूसिंह काठाड़ी

एवं समस्त स्वयंसेवक सूरत

संघशक्ति

4 जुलाई, 2024

वर्ष : 61 अंक : 07

-: सम्पादक :-

राजेन्द्र सिंह राठौड़

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय-सूची

समाचार संक्षेप	✍	04
चलता रहे मेरा संघ	✍ श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर	05
पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)	✍ श्री चैन सिंह बैठवास	06
महायोगी श्री अरविन्द और महा कर्मयोगी....	✍ श्री अजीतसिंह धोलेरा	09
इतिहास की विभिन्न माध्यमों से पुनर्व्याख्या....	✍ सुश्री सविता कोटवाद	13
धन साधन है या साध्य?	✍ स्वामी श्री चिदानन्द जी	15
मुगल साम्राज्य के चर्मोत्कर्ष काल में....	✍ डॉ. श्री मातु सिंह मानपुरा	19
सदाचार और पुरुषार्थ	✍ श्री रामनन्दन प्रसाद सिंह	24
मरना यहाँ की शान है	✍ श्री युधिष्ठिर	26
बेटी से बहू की यात्रा	✍ सुश्री रश्मि रामदेरिया	28
आदर्श और अनूठे गाँव	✍ कर्नल श्री हिम्मत सिंह	30
अपनी बात	✍	34

समाचार संक्षेप

प्रशिक्षण शिविर :

श्री क्षत्रिय युवक संघ का उच्च प्रशिक्षण शिविर 18 मई से 29 मई तक गांधीनगर (गुजरात) के निकट राधेजा ग्राम में स्थित गांधीनगर इन्टरनेशनल स्कूल में सम्पन्न हुआ। बहुत बड़ा विद्यालय का भवन तथा बहुत बड़ा छात्रावास का भवन शिविर स्थान बना। भवनों में पर्याप्त रूप से बिजली व पंखों आदि की सुविधा थी, पानी की भी पर्याप्त सुविधा थी। विद्यालय में पेड़ भी खूब थे जिनसे छाया भी अच्छी उपलब्ध थी। खुला ध्वज स्थान भी विद्यालय परिसर में उपलब्ध था। खेल के लिए विद्यालय के पास ही खेत थे। 450 की संख्या में शिविरार्थी थे पर सभी के लिए हर प्रकार की सुविधा थी। गर्मी भी अपने तेवर दिखाती रही पर अनुकूल परिस्थितियाँ होने से परेशानी नहीं रही। संघ दर्शन के प्रशिक्षण हेतु सभी कार्यक्रम आशानुकूल चलते रहे।

चुनाव पूर्व की घटना के कारण गुजरात में समाज की तरफ से जो व्यापक प्रदर्शन हुए, उस संस्था संकलन समिति के सदस्य भी शिविर में आए। अस्मिता आंदोलन की जानकारी भी दी और समाज के विभिन्न विषयों पर चर्चा की। सामाजिक एकता के लिए परस्पर सम्पर्क व सहयोग निरन्तर बनाए रखने की बात चली। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शंकरसिंह जी बाघेला भी भेंट करने हेतु शिविर में आए। गुजरात के संघ सहयोगी समाज बन्धुओं को भी शिविर दर्शन के लिए अवसर दिया गया था जिसमें काफी सहयोगी आए, शिविर भी देखा और चर्चा भी की।

साणंद तहसील के ग्राम काणेटी में 23 मई से 29 मई तक बालिका माध्यमिक शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में गुजरात व राजस्थान की बालिकाएँ सम्मिलित हुई। गर्मी के तेवर तेज थे, मगर शरणार्थियों की लगन की दृढ़ता पर कोई असर नहीं हो सका। शिविरार्थियों की पात्रता तय हो गई थी अत: जो उस पात्रता में नहीं आ रही थी उनको बड़ी टीस थी कि काश, हमको भी अवसर मिला होगा।

जून माह के प्रारम्भ से ही अलग-अलग संघ के क्षेत्रों में प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ हो गए हैं। अभी सभी शिविर प्राथमिक स्तर के ही सम्पन्न हुए हैं। 5 से 8 जून तक श्री महाराणा प्रताप सभा भवन, लालबाग, श्रीनाथद्वारा, जिला-राजसमंद में शिविर हुआ। 8 से 11 जून तक केरेश्वर, महादेव लूणदा (जिला-उदयपुर) में; 11 से 14 जून तक पदमगढ़ नीनोर (जिला-प्रतापगढ़) में; 14 से 17 जून तक गुरलां (भीलवाड़ा) में; 15 से 18 जून तक इटावा भोप जी (जयपुर) में; 9 से 12 जून तक रासला (जैसलमेर) में; 16 से 19 जून तक सलखा (जैसलमेर) में कर्मचारियों हेतु; 17 से 20 जून तक सेतरावा (जोधपुर) में, 20 से 23 जून तक नागोला (केकड़ी) में, 20 से 23 जून तक सोढाकोर (जैसलमेर) में, 20 से 23 जून तक दातीणा (नागौर) में, 25 से 27 जून तक बारी महोबा (उत्तरप्रदेश) में तथा 27 से 30 जून तक राजपूत छात्रावास निम्बली नाडी, खारिया सोढा रोड़, सोजत सिटी में श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुए।

उच्च प्रशिक्षण शिविर में मिले हुए दायित्व के सम्बन्ध में सभी संभागों में चर्चाएँ प्रारम्भ हो चुकी हैं। सभी सहयोगी अपने क्षेत्र में कार्य सम्बन्धी योजनाएँ तैयार कर रहे हैं।

चलता रहे मेरा संघ

(भवानी निकेतन जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर 2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर द्वारा 28.5.2023 को प्रदत्त प्रभात संदेश)

स्वामी रामतीर्थ एक चट्टान पर बैठे थे। कड़ाके की धूप आ गई।

शिष्यों ने कहा–महाराज! धूप बहुत तेज है, छाया में चलें।

स्वामी रामतीर्थ का जवाब था,–ये सूर्य की किरणें मुझे तपाने आई हैं। मुझे तपस्वी बनाने आई हैं।

थोड़ी देर में बहुत जोरदार बरसात आई।

शिष्यों ने कहा–महाराज! बरसात बहुत तेज है, ठंडी हवाएँ हैं, स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा, मकान के अन्दर चलें।

स्वामी रामतीर्थ–यह बरसात लौंडिया मुझे स्नान कराने आई है।

ऐसे लोगों का कोई भी बाधा, कोई भी प्रतिकूलता क्या बिगाड़ लेगी? आप साधक हैं और साधना में आई विपत्तियाँ आपकी परीक्षाएँ ही हैं। इनसे हमारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। आज भी कड़ाके की धूप में सब काम कर रहे हैं। आज बरसात आई पर हमें रोक नहीं सकती। थोड़े समय के लिए ऐसी प्रतिकूलताएँ आती हैं और चली जाती हैं। सावधान रहें नैया को डगमग न होने दें, पार अवश्य लगेंगे। 'आए रम्य किनारे, बल और लगाते हैं।' अब तो बहुत ज्यादा दूर नहीं है।

एक बरगद के पेड़ पर एक हंस बैठा था। जंगल में आग लग गई। हंस बैठा रहा। पेड़ ने कहा–मैं तो चल फिर नहीं सकता, तुम तो अपने आपको बचा लो।

हंस बोला–मैं इतना कृतघ्न नहीं हूँ कि ऐसी विकट परिस्थिति में आपको मैं अकेला छोड़ जाऊँ।

बरगद ने बहुत समझाया। पर जिस पेड़ ने शरण दी, उस पेड़ को जलने के लिये छोड़कर उड़ जाना हंस को नहीं भाया। दोनों ही जलकर खाक हो गये। लेकिन हंस की कृतज्ञता हमको क्या बताती है? हमको भी कृतज्ञ होना है, हमको मजबूत भी बनना है, हमको बाधाओं से घबराना भी नहीं है। आज के मंगल प्रभात में श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर से हमको यही मंगल संदेश है।

भंवरों में फंस जाना मानवी दुर्बलता है, परन्तु भंवर का अनुमान किनारे पर बैठकर न लगाइए, जल में डुबकी लगाकर देखिए।

– अमृता प्रीतम

पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

''मेरा यह कुटुम्ब (श्री क्षत्रिय युवक संघ) मुझे बहुत प्रिय है। मैं अपने इस कुटुम्ब पर किसी प्रकार का कलंक नहीं रखना चाहता। व्यक्ति रूप में मुझे चाहे जितना दोष दें, लेकिन मेरे समूह रूप को कोई दोषित न करे क्योंकि उसके लिए तो मैंने यह सब कुछ किया है। मैं चाहता हूँ मेरा कुटुम्ब दोष रहित, कलंक रहित, बेजोड़ और बेमिसाल हो। उसमें सम्मिलित होने के लिए लोग तरसें, न कि वह (संघ) लोगों की संख्या और जमघट के लिए तरसता रहे।'' **– पूज्य श्री तनसिंह जी**

पूज्य श्री तनसिंह जी के इस कुटुम्ब (संघ) के लिए कोई तरसा या नहीं, पर पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा निःसंदेह इस कुटुम्ब के लिए तरसे और तरसे तो इतने तरसे कि वे अपनी लगी सरकारी नौकरी छोड़ सदा-सदा के लिए इस कुटुम्ब के अभिन्न अंग बन गये। इस कुटुम्ब का शतांश भी यदि किसी ने पा लिया है, उसका संसार के क्षणिक सुखों से मोह भंग हो गया। पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा ने संसार को नहीं ठुकराया, वे संसार में ही रहे, संसार के हर रंग में से गुजरे, पर संसार के क्षणिक सुखों की ओर नहीं ललचाये, सदैव अलिप्त रहे। पूज्यश्री तनसिंह जी के कुटुम्बी बनकर पूज्य श्री नारायणसिंह श्री रेड़ा ने विकास का सही मार्ग पा लिया।

सन् 1950 में मात्र 10 वर्ष की आयु में बीकानेर में लगे एक पी.टी.सी. शिविर से उनकी संघ की यात्रा प्रारम्भ हुई। पूज्य श्री तनसिंह जी की नजरों में वे सन् 1956 में चूरू शिविर के बाद ही आए। सन् 1957 में वे पूज्य श्री तनसिंह जी की नजरों में चढ़ गये यानी पूरी तरह से पूज्यश्री को भा गये और पूज्यश्री ने पूज्य श्री नारायणसिंह जी को एक पत्र लिखा-

राजपूत बोर्डिंग हाउस, जयपुर

प्रिय नारायण सिंह रेड़ा, 30-01-1958

यह मेरा पहला पत्र है।...... हमने जो कार्य अपने जीवन में लिया है, वह सर्वांगीण तो है ही किन्तु उसमें शुष्कता बहुत है।.... छोटे होकर भी तुम्हें यह नहीं भूलना है कि उत्तरदायित्व को निभाने के लिए आयु का कोई बहाना नहीं बनाया जा सकता।.....

मेरे स्नेह का सागर अपार है, उसमें कोई भी प्यासा अपनी प्यास बुझा सकता है लेकिन इस स्नेह का अधिकारी वही है जो सोते, जागते, बैठते, खाते-पीते अपने गुरुत्तर कार्य को नहीं भुलाता। मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम मेरे इस स्नेह के वास्तविक अधिकारी बनो।

सोचो और सोचते जाओ.....सभी समस्याओं का हल तुम्हें मिल जाएगा।..... यदि तैयार हो तो अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन को ले आओ। मुझे तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य को देखने की हार्दिक इच्छा है।.....

तुम्हारा : **तनसिंह**

इसी पत्र के उत्तर में पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा ने पूज्य श्री तनसिंह जी को पत्र लिखा-

राजपूत कोर्डिंग हाउस बीकानेर

03-02-1958

पूज्य एवं प्रिय,

कल आपका एक पत्र मिला, यह पहला पत्र था।.. मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरे शरीर में धौंकनी द्वारा प्रेरणा की फूँक मार रहा हो। जी चाहता है बच्चे की भाँति गले से लिपट जाऊँ और छूटने का नाम न लूँ।

मैं अपने आपको अधिक भाग्यशाली समझता हूँ जिसने अपना जीवन किसी को समर्पित कर दिया। स्वयं का अस्तित्व उसके अस्तित्व में मिला दिया।

आपका ही अनेकों में एक

नारायणसिंह रेड़ा

दिनांक 11-03-1959 को पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा के सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी ने लिखा- ''नोखा प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 1959 में इसने मार्मिक ढंग से कहा कि मुझे संघ कार्य के लिए नौकरी छोड़ने की आज्ञा दीजिये। मैंने इसके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया तो इसके हृदय में पीड़ा हुई और मुँह उतर गया था। उसके बाद भी यह समीप आने की भरसक कोशिश करता है। कुछ ही अर्से में उसके सर्वांगीण विकास की पूरी सम्भावना है।''

दिनांक 02-04-1959 को पूज्य श्री तनसिंह जी ने पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा को एक पत्र लिखा- ''कभी-कभी मैं आश्चर्य करता हूँ कि इस छोटी-सी आत्मा में इतनी अधिक आग और उतनी ही आधिक सहनशीलता जो न भभकती है और न ठण्डी होती है, कैसे टिकी रहती है।''

पूज्य श्री तनसिंह जी ने पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा के सम्बन्ध में लिखा है-''इसे समझने के लिए ऊपरी नजर ही काफी नहीं है। स्वयं मनोविज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान रखने के लिए हरेक बात को गौर से देखा करता है।''

दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा की सरकारी नौकरी बीकानेर जिले के एक गाँव में लग गई। घर में सबसे बड़े और शादीशुदा, चार छोटे भाई, कमाई का जरिया इनकी लगी नौकरी ही थी। विपरीत घरेलू परिस्थितियाँ होते हुए भी लगी नौकरी छोड़कर पूज्य श्री तनसिंह जी को पाने की, इस कुटुम्ब के हो जाने की उनकी प्यास उत्तरोतर तीव्र होती गई। और मन ही मन निर्णय कर लिया था कि अब शेष जीवन पूज्य श्री तनसिंहजी के सान्निध्य में ही बिताना है।

सन् 1959 के मई माह में संघ का ओ.टी.सी. शिविर हल्दीघाटी में लगा। नौकरी छोड़कर इस शिविर में आये और यह निर्णय लिया कि पूज्य श्री तनसिंह जी के सान्निध्य में रहकर ही अब जीवन भर संघ का काम करना है।

एक दिन शिविर में बरसात आई। पूज्य श्री तनसिंह जी की हस्तलिखित सहगीतों की डायरी पानी में भीग गई। पूज्य श्री तनसिंह जी के पास वह भीगी हुई डायरी देखी तो, पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा कह पड़े-''यह भीगी हुई डायरी मुझे दे दो न।'' पूज्य श्री तनसिंह जी ने पहले तो पैनी नजर से घूर कर देखा और तुरन्त कह दिया, ''डायरी ही क्या, मैं तो तुम्हें पूरा संघ ही सौंप देना चाहता हूँ।''

पूज्य श्री तनसिंह जी ने दिनांक 17-06-1971 की अपनी डायरी में पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा के लिए लिखा-

''वर्षा हो रही थी। आकाश से सीधी बूंदें गिर रही थी। छत की जगह एक पेड़ था। वह मेरी नजरों में पहले ही चढ़ चुका था। मैंने उसके भीतर अपने आपको खूब स्पष्टता से देख लिया। चाहता था कि यदि यह आदमी मेरे हाथ लग जाए तो कितना अच्छा हो। मैंने अपना हाथ फैलाया और वह सिमट आया। और कुछ याद नहीं, केवल एक ही बात थी-''मुझे भी रख लो न!'' यही तो मैं चाहता था और रख लिया सदा के लिए। जहाँ उसे रखा वहाँ से न तो कभी उसे हटाया और न किसी दूसरे को रखा। 1959 के बाद मैंने सुख की अनुभूति की क्योंकि मुझे लगा कि इस जीवन में मेरा कम-से-कम एक साथी तो ऐसा है जिसे मैं केवल अपना कह सकता हूँ।

''उसके बाद अनेक तनाव आये होंगे। मुझे अटपटा लगता केवल तब जब मैं उसे खोने के भय से भयभीत हुआ होऊँगा। वह मुझे न छोड़े तो मैं संसार से जंग छेड़ सकता हूँ। मैं सब कुछ कर सकता हूँ, मुझे केवल साथ चाहिए। एक ही व्यक्ति का साथ काफी है।'' इसलिए पूज्य श्री तनसिंहजी ने कहा-

चाहे एक ही जले पूरे स्नेह से जले, ऐसे दीप चाहिए।
जिसकी काँपे नहीं लौ, कहीं दुनिया में हो ऐसी ज्योत चाहिए।।

पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा एक ऐसे दीप थे जो पूरे मनोयोग से जले। वे पूज्य श्री तनसिंह जी के प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व से अत्यधिक आकर्षित हुए और उनके ऊपर

ऐसी श्रद्धा बैठ गई कि जो अनेक बवंडरों में भी अटूट रही। वे पूर्ण रूप से तनसिंह मय बन गये। पूज्य श्री तनसिंह जी ने उनकी समर्पित भावना को समझ, उन्हें सर्वात्मना रूप से अपना लिया।

अब नारायणसिंह जी रेड़ा हर दम पूज्य श्री तनसिंह जी के साथ ही रहने लगे और पूज्य श्री तनसिंह जी भी यही चाहते थे कि वह हर दम साथ बना रहे। दोनों ही एक दूसरे के साथ होना और साथ बना रहना चाहते थे।

एक घटना घटी। बाड़मेर में स्थित अपने मकान की छत पर से पूज्य श्री तनसिंह जी नीचे गिर गये और पूज्य श्री के दोनों हाथ टूट गये। उस समय पूज्य श्री तनसिंह जी के पास तीन-चार स्वयंसेवक रहते थे किन्तु एक-एक कर सभी छोड़ कर चले गये, केवल एक पूज्यश्री नारायणसिंह जी रेड़ा ही पूज्य श्री के साथ टिके रहे। वे ही पूज्य श्री को लघु शंका और दीर्घ शंका करवाते थे, वे ही सफाई करते, स्नान करवाते, भोजन करवाते थे। इस सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी स्वयं ने एक बार अपनी माताजी से कहा- ''जन्म देने वाली माँ आप हैं, पर आज तो नारायणसिंह ने ही माँ का फर्ज निभाया है।'' माता जी भी गद्‌गद्‌ होकर बोली-''धन्य हो तुम जिसे ऐसा भाई मिला और धन्य है नारायणसिंह जिसको तुम मिले।''

पूज्य श्री तनसिंह जी और पूज्य श्री नारायणसिंह जी के बीच ऐसी अभिन्नता थी कि जिसे अभिव्यक्त करना सहज नहीं। 1969 बोरून्दा ओ.टी.सी. में पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा को संघ प्रमुख बना दिया, परन्तु वे कभी शिविर में पूज्य श्री तनसिंह जी के शिविर में न होने पर भी संघप्रमुख के स्थान पर खड़े न हुए।

पूज्य की नारायणसिंह जो रेड़ा अनेकों में एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका जन्म एक साधारण परिवार में हुआ। वे अपनी पूर्व जन्म की तपस्या से पूज्य श्री तनसिंहजी के सम्पर्क में आये व आये ही आये कि कभी गए ही नहीं। उन्होंने पूज्य श्री तनसिंह जी को सर्वात्मना स्वीकार कर उनके सान्निध्य में संघ का काम करते-करते योग की उच्च भूमिका में देह त्याग किया।

(क्रमशः)

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि.	14.7.2024 से 17.7.2024	आलोक आश्रम, बाड़मेर।
02.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024	बरियाड़ा (शिव), बाड़मेर-जैसलमेर सड़क मार्ग पर।
03.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024	चाडी (रामसर) रामसर से चोहटन मार्ग पर।
04.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.2024	बांदरा (बाड़मेर) बाड़मेर से कवास की तरफ।
05.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.224	मालण माता रोहिड़ाला, हरसाणी से रोहिड़ाला मार्ग पर।

गजेन्द्र सिंह आऊ

शिविर कार्यालय प्रमुख (श्री क्षत्रिय युवक संघ)

महायोगी श्री अरविन्द और महा कर्मयोगी पूज्य तनसिंह जी

– श्री अजीतसिंह धोलेरा

महायोगी श्री अरविन्द की साधना अतिमनस तत्त्व के पृथ्वी पर अवतरण की थी, क्योंकि आम व्यक्ति उतना ऊँचा नहीं उठ सकता, जिससे वह अतिमनस से अपने जीवन में सुख, शान्ति व प्रेम का अनुभव कर सके, उस साधना को पूर्ण योग भी कहते हैं।

पूज्य तनसिंहजी की साधना सम्पूर्ण मानवता को स्वधर्माभिमुख बनाने की थी जो सम्पूर्ण योग मार्ग (संयो मा) नाम से जानी जाती है। इस साधना द्वारा विश्व-मानव स्वधर्म-स्वकर्म का सुपरिपालन करके परम सिद्धि की प्राप्ति कर सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इस साधना का क्रियात्मक स्वरूप है।

श्री अरविन्द का पूर्ण योग व पूज्य तनसिंह जी का सम्पूर्ण योग, दोनों बहुत मूल्यवान, कठिन व दीर्घकालीन साधना है। पर उन दोनों में जो फर्क है उसको एक उदाहरण से समझें।

दूध पूर्ण खुराक माना जाता है उसमें शरीर का स्वास्थ्य व विकास उचित मात्रा व क्रम में होता है, यह पूर्ण योग है।

उस दूध में थोड़े चावल, मिश्री, केसर, इलायची, बादाम, काजू डालकर उबाला जाए और खीर बनावें तो उसमें स्वाद के साथ विटामिन, प्रोटीन आदि पोषक तत्त्वों की मात्रा बढ़ जाती है। यही है सम्पूर्ण योग।

श्री अरविन्द का संक्षिप्त परिचय-

भारत में सन् 1857 के बाद अंग्रेज शासन स्थापित हो गया था। सरकार के सभी उच्च पदाधिकारी अंग्रेज ही होते थे। उनकी प्रभावी रहन-सहन देखकर भारतीय बच्चों के दिमाग में ऐसे अफसर बनने के स्वप्न जगते रहते थे।

कलकत्ता के पास के एक गाँव में एक गरीब लड़के ने अंग्रेज डॉक्टर का रुआब देखकर वैसा डॉक्टर बनने की सोची। पिता गरीब थे, मगर दृढ़ निश्चय, कठोर परिश्रम और अध्ययन केन्द्री दिमाग से उस लड़के ने, जिसका नाम कृष्ण था, शिष्यवृत्ति से प्रथम श्रेणी में मेट्रिक पास करी। आगे कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए पैसे तो थे नहीं, अतः वह उदास रहने लगा। पर उसके धनिक सहपाठियों ने उसकी फीस भर दी और पढ़कर कृष्णधन स्नातक हो गया। आगे डॉक्टर बनने के लिए इंग्लैण्ड जाना पड़ता था, अत: कृष्णधन ने नौकरी कर ली और आवश्यक धन प्राप्त होते ही वह इंग्लैण्ड पहुँच गया। डॉक्टर भी बन गया और भारत में आकर स्वयं तो अंग्रेजी ठाठ से रहने लगा ही, साथ-साथ अपने परिवार को भी 'अंग्रेज' बना दिया। पश्चिम की भौतिक विचारधारा से प्रभावित होकर हिन्दू धर्म में भारतीय जीवनशैली को हेय मानने लगा। अपने तीनों बच्चों को हिन्दू संस्कृति से बचाने के लिए, पढ़ने के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया। उनमें सबसे छोटा पुत्र अरविन्द तो केवल सात वर्ष का था। इंग्लैण्ड में एक पादरी को ट्यूटर बनाकर बच्चों पर हिन्दुत्व की छाया भी न पड़े ऐसी व्यवस्था कर दी।

पैसे तथा अन्य कई अभावों से संघर्ष करके श्री अरविन्द डॉक्टर बन गये। अब पिता की चाह पूरी करने के लिए आई.सी.एस. की परीक्षा भी पास कर ली। पिता कृष्णधन ने कलैक्टर की पोष्ट की व्यवस्था भी श्री अरविन्द के लिए कर रखी थी। मगर परमेश्वर की योजना तो अलग ही थी।

पिता-पुत्र का अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह-

हुआ यह कि भारत में अंग्रेजों का भक्त बने कृष्णधन को अंग्रेजी शासन की ओर से ऐसी चोट लगी कि वे अंग्रेजों की भारतीय संस्कृति व भारतीय लोगों के प्रति हेय दृष्टि के कारण, भारतीयों को मानव नहीं पशु मानने की मानसिकता से वे स्वयं अंग्रेजियत के दुश्मन बन

गये। तो उधर इंग्लैण्ड में पढ़ रहे श्री अरविन्द मातृभूमि के चाहक व क्रांतिकारी युवकों द्वारा अंग्रेज विरुद्ध चल रहे आन्दोलन के सदस्य बन गये। आई.सी.एस. का प्रमाण पत्र पाने के लिए घुड़सवारी की परीक्षा देनी आवश्यक थी। श्री अरविन्द भारत-शत्रु अंग्रेजों की नौकरी करना नहीं चाहते थे। अत: वे उस परीक्षा में उपस्थित ही नहीं रहे और भारत लौट आने का कार्यक्रम बना लिया।

उन दिनों इंग्लैण्ड पधारे हुए बड़ौदा के महाराज सयाजीराव गायकवाड़ से श्री अरविन्द की मुलाकात हुई। श्री अरविन्द की प्रभावी प्रतिभा व मातृभूमि के प्रति पूज्य भाव को जानकर भारत में आकर बड़ौदा राज्य की सेवा करने का प्रस्ताव महाराजा ने रखा जिससे भारत में आकर श्री अरविन्द बड़ौदा राज्य की नौकरी में लग गये। श्री अरविन्द बड़ौदा राज्य संचालित कॉलेज में अंग्रेजी व फ्रेंच भाषा के अध्यापक के साथ राज्य के कारोबार में सहयोग देने का, भारतीय ग्रंथों का अध्ययन, योग साधना, साहित्य सृजन के साथ-साथ बंगाल के क्रान्तिकारियों को भी गुप्त रूप में सहायता भेजते रहे।

अब श्री अरविन्द ने सोचा कि अंग्रेजों को यह पता लग जाय कि गायकवाड़ का एक कर्मचारी क्रांतिकारियों की सहाय करता है तो महाराजा पर तकलीफ आ सकती है। ऐसा सोचकर, बड़ौदा की नौकरी छोड़कर कलकत्ता आगये और 'वन्दे मातरम्' नाम के राष्ट्रवादी दैनिक, अखबार गुप्त रहकर निकालने लगे। उसमें अंग्रेज शासन-विरुद्ध तीखे लेख लिखने लगे। आग बरसते उन लेखों से पूरे भारत में जागृति की लहरें उठने लगी तब अंग्रेज शासन उससे जलने लगा। श्री अरविन्द पर गलत इल्जाम लगाकर एक साल की कैद की सजा दे दी।

कैद में श्री अरविन्द की योग साधना तेज गति से चलने लगी। एक साल बाद कोर्ट ने श्री अरविन्द को निर्दोष जाहिर किया और श्री अरविन्द बाहर आकर उसी पुराने काम में लग गये। अंग्रेजों ने किसी भी बहाने श्री अरविन्द को बन्दी बना लेने की ठान रखी थी। अतः श्री अरविन्द गुप्त रूप से फ्रेन्च शासित पॉन्डीचेरी (सम्प्रति पॉन्डीचेरी केन्द्र शासित राज्य है।) चले गये और 1910 से 1950 तक अर्थात् शेष पूरे जीवन भर वहीं साधना में रत रहे। श्री अरविन्द की उस अतिमनस के अवतरण की साधना में सहायक बनी फ्रांस की एक महिला जो श्री माताजी के नाम से जानी जाती रही। उन्होंने श्री अरविन्द के सेवक व मुलाकातियों के लिए एक आश्रम की स्थापना की जो आज भी साधना का केन्द्र है।

पूज्य तनसिंहजी की साधना

पृज्य तनसिंह जी की साधना श्री क्षत्रिय युवक संघ की प्रवृति के बारे में क्या लिखा जाये? भूतकाल में कभी ऐसी साधना की कोई जानकारी नहीं मिलती। मिले भी कैसे? आवश्यकता ही नहीं थी ऐसी किसी साधना की। परिवार, समाज, संत आदि से स्वधर्माचरण की शिक्षा प्रवचनों से, उपदेशों से या उपदेशों से नहीं अपने-अपने आचरणों से नयी पीढ़ी को मिलती रहती थी और नई नयी पीढ़ी उसको सहर्ष अपनाती थी।

पूज्य श्री की साधना के बारे में लिखना या बोलना इसलिए भी सरल नहीं है कि वह पूर्ण रूप से क्रियात्मक साधना है। करने से ही संघ-साधना सामुहिक संस्कारमय कर्मप्रणाली समझने में आ सकती है।

संस्कार सिंचन की परम्परा लुप्त होती जा रही थी। लोग, विशेषकर संस्कृति के धारक, कर्तव्य के पालक, धर्म के संरक्षक, पोषक व संवर्धक क्षत्रिय ही भ्रष्ट हो गया था। उससे व्यथित होकर पूज्य श्री को गाना पड़ा-

जो पथ का दर्शक था, पथ भूल गया है रे।

पथ भ्रष्ट, कर्त्तव्यच्युत व्यक्ति, समाज या परम्परा का अस्तित्व खतरे में आ जाता है। पूज्य श्री ऐसी संभावना से किशोरावस्था में ही दुखी हो गये थे। क्या किया जाय? इस प्रश्न का उत्तर खोजने में दस साल लग गये। गहन चिंतन व शास्त्रों के अध्ययन फलस्वरूप उत्तर मिल गया

समयोचित, सरल, उपयोगी व व्यावहारिक मार्ग मिल गया और एक नये ही प्रकार की साधना-श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। उसके महत्त्व के बारे में पूज्य श्री ने लिखा है-

अभिनव तप से यहाँ जगत के भाग्य लिखे जाते हैं।

श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना अभिनव तप की है। ऐसा तप पहली बार किया गया है, किया जा रहा है। ऐसे अनूठे तप से क्य मिला? क्या मिल रहा है? इन प्रश्नों का उत्तर पूज्य श्री रचित सहगान में दिया गया है-

अब जागो शिव! उतरी कब से है यहाँ गंग की धारा।

जिस तरह श्री अरविन्द मानव प्रकृति की अतिमनस शक्ति का पृथ्वी पर अवतरण करके दिव्य रूपान्तरण करना चाहते थे, उसी तरह पूज्य श्री सांघिक साधना से पहले क्षत्रिय में, फिर पूर्ण मानवता में कर्तव्य ज्ञान की गंगा का अवतरण कराना चाहते थे। क्षत्रिय स्वधर्म का पालन करके अपने जीवन से विश्व में स्वधर्माचरण का संदेश फैलाने का पूज्य श्री का ध्येय था। कर्तव्य कर्म, स्वकर्म का मूल्य समझाते गीता में कहा गया है-

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।

ईश्वर प्रदत्त कर्म ही स्वकर्म है। ऐसे कर्म करने से ही ईश्वर की सही उपासना की जाती है और परम सिद्धि परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है।

श्री अरविन्द और पूज्य श्री की साधना में फर्क-

श्री अरविन्द की साधना विश्व कल्याण के लिए थी, फिर भी मुख्य रूप से वह व्यक्तिगत साधना थी। श्री माताजी और अन्य एक-दो के सिवाय यह साधना सामुहिक नहीं थी। अतः उसमें बाह्य जगत के अवरोध के विरोधों से कम और अन्तर्जगत की समस्याओं से ज्यादा संघर्ष करना पड़ता था। यह साधना नये और अनूठे प्रकार की थी, अतः समस्याओं के समाधान के लिए न तो कोई शास्त्र सहायक हो सकते थे, न कोई अनुभवी मार्गदर्शक का सहयोग मिलता था। कैसे मिले? कौन सहयोग कर सके? क्योकि अतिमनस शब्द उसके अवरोहण के लिए जो साधना थी वह श्री अरविन्द का निजी सृजन था और उस पर अकेले को ही चलना था। चले भी। इस साधना में बाह्य अवरोध न हो। इसलिए एक ही मकान में 1910 से 1950 तक, अंतिम सांस तक 40 साल एकान्त में ही रहे।

श्री अरविन्द की साधना में विक्षेप न आये और सरलता से चलती रहे, इसलिए श्री माताजी ने उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति अपने सिर पर ले ली थी। श्री माताजी ने फ्रांस में कुछ आध्यात्मिक सिद्धियाँ प्राप्त की थी। बचपन से ही उनमें चैत्य भूमिका की और आध्यात्मिक अनुभूतियों की हलचल शुरू हो गई थी। अल्जिरिया के प्रखर गुह्य विद्या के उपासक थेंओं और उनकी पत्नी आल्मा के साथ श्री माताजी दो साल तक रही थी और गुह्य विद्या की कठिन साधना करी थी। अतः श्री अरविन्द की साधना को वह आंशिक रूप से समझ सकती थी और उनको थोड़ी सहाय भी करती थी। अतः श्री अरविन्द बिना खास कोई अवरोध अपनी साधना कर सकते थे।

पूज्य श्री की साधना-श्री क्षत्रिय युवक संघ सामुहिक संस्कारमय कर्म प्रणाली की थी। इसलिए समूह को साथ लेकर चलने में आपश्री को बहुत संघर्ष करना पड़ा था। जहाँ 'है न विदायी की रश्में, प्यार का स्वागत कहाँ?' बाहरी कोई आकर्षण नहीं, संघर्षपूर्ण, त्याग मूलक और परिणाम का कोई निस्तेज नक्शा भी न दिखे, ऐने अस्पष्ट, आकाशी, दीर्घकालीन साधना पथ पर कौन चले?

प्रारम्भ में तो अपने को बड़ा मानने वाले जागीरदार, ठाकुर, छोटे-बड़े संगठन के बन बैठे अध्यक्ष आदि पदाधिकारी लोग संघ को अपने इलाके में आने न देना ही पसंद करते थे। साधनों का अभाव भी समस्या थी। ऐसी कई बाह्य जगत की समस्याओं के साथ-साथ अन्तर्जगत की नाना प्रकार की समस्याओं से लड़ना पड़ता था। पूज्य श्री स्पष्ट रूप से मानते थे कि जब तक आंतरिक शक्ति, ईश्वरीय शक्ति, आध्यामिक शक्ति का जागरण व उत्थान

नहीं होता तब तक बाहरी उछल-कूद चाहे कितनी ही कर लो, इच्छित परिणाम नहीं आ सकता।

पूज्य श्री के तत्कालीन सहयोगियों में से शायद ही किसी को आध्यात्मिकता की जानकारी थी। अतः उसमें रुचि न होना स्वाभाविक है। आम सहयोगी की दृष्टि में समाज सेवा का मतलब था समाज को व्यसनों से मुक्त किया जाय, समाज में एकता स्थापित हो। (कैसे? कोई चिन्तन नहीं।) शिक्षा की वृद्धि हो आदि ऊपरी कार्य करना। अतः ही जब पूज्य श्री ने साधना पथ पर चर्चा शुरू की तो कहा गया-'यह तो पण्डावाद है, समाज की बात करो न। समाज के काम में परमेश्वर कहाँ से आ गये?' जैसी हास्यास्पद बातें कहकर विरोध करने वाले कई थे और उनमें से कुछेक ने तो संघ छोड़ ही दिया था। इसलिए पूज्य श्री को गाना पड़ा था -

साधन की कमी है, कार्य कठिन है।
मार्ग में माया के अगणित विघ्न है।।

इंग्लैण्ड में अध्ययनरत श्री अरविन्द क्योंकि अंग्रेजियत विचारधारा में पाले गये थे, भारतीय दर्शन से अनभिज्ञ ही रहे थे। बड़ौदा आकर ही योग का अभ्यास व भारतीय धर्मग्रन्थों का अध्ययन शुरू हुआ था। आगे जाकर उनकी साधना पूर्ण योग में परिवर्तित हो गई थी। फिर भी वह साधना इने-गिने लोगों तक ही सीमित रह गई। श्री अरविन्द दर्शन के नियमित व निरन्तर चलने वाले कार्यक्रम बहुत ही अल्प मात्रा में मर्यादित क्षेत्र में और चन्द लोगों तक सीमित रहे हैं। फलस्वरूप श्री अरविन्द और उनकी साधना से आम समाज अपरिचित ही है।

पूज्य श्री की साधना श्री अरविन्द की साधना से बहुत भिन्न थी और है। बारह-तेरह साल के किशोर पूज्य श्री अध्ययन के साथ-साथ समाज चिन्तन करने लगे थे। समाज की, विशेष करके क्षत्रिय समाज की स्वधर्म विमुखता से वैयक्तिक जीवन में ही व्यस्त रहने की मानसिकता से आप श्री के कोमल हृदय पर गहरी चोट पड़ी थी। ऐसी करुण स्थिति से समाज को बाहर निकालने को आप श्री संकल्पबद्ध हो गये। अधध्यन में आगे बढते गये, साथ-साथ समाज को कर्तव्य के प्रति जगाकर स्वधर्माभिमुख बनाने के मार्ग की खोज करते रहे। इधर पढाई पूरी हुई और उधर श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूपमें एक अनूठी राह पर खुद तो चले, हजारों समाज युवकों को चलाया और आज भी बढ रही संख्या व गुणवत्ता में वे चल रहे हैं। समाज में जागृति की हलचल होने लगी। कर्तव्य ज्ञान का दीप प्रज्वलित हो उठा। प्रशिक्षण शिविर व शाखाओं के माध्यम से पूज्य श्री की साधना में सहायक बनने के लिए प्रथम संघ के ध्येय की समझ, और बाद में समझ के साथ स्वयंसेवकों की उत्तरोतर बढोतरी होने लगी। समाज जागरण के साथ पूज्य श्री मानव जीवन के अन्तिम व एकमात्र लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति के लिए संघ प्रशिक्षण द्वारा मार्गदर्शन करते रहे, प्रेरणा देने लगे।

(क्रमशः)

जलधि मन्थन से प्राप्त हुए थे चौदह रत्न,
दधि मन्थन से प्राप्त होता है मक्खन।
अरणि मन्थन करने से प्रकट होत है अग्न,
मुक्ता सम मुक्तके मिलता जब करो मन मन्थन।।

- अल्पज्ञ

इतिहास की विभिन्न माध्यमों से पुनर्व्याख्या : आवश्यकता व प्रोत्साहन

– सविता कोटवाद

कुछ समय पूर्व व्यवसाय में सर्जन व इतिहासकार श्रीमान ओम रत्नू की पुस्तक 'महाराणा, सहस्त्र वर्षो का धर्मयुद्ध' का विज्ञापन देख अध्ययन की जिज्ञासा से पुस्तक क्रय की। ओम रत्नू जी मात्र इतिहासविद् ही नहीं वरन् सही अर्थ में राजपूत इतिहास की पुनर्व्याख्या कर उसे सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करने वाले लेखक हैं। वर्षो से स्वार्थ के वशीभूत राजनेताओं, दुर्भावनापूर्ण इतिहासकार, पूर्वाग्रहग्रस्त समाज के अन्य वर्गों के एकीकृत षड़यंत्र के परिणाम स्वरूप राजपूतों के आत्मोत्सर्ग व दानशीलता को कूटनीतिपूर्वक विलोपित कर चन्द निरंकुश दुराचारी और चरित्रहीन व्यक्तियों को सम्पूर्ण समाज का चेहरा बनाकर प्रस्तुत किया गया। सम्प्रति स्थिति तो यह हो गई है कि नई पीढ़ी के अन्य वर्गों के लोग ठाकुर या राजपूत समाज को सम्पूर्ण सामाजिक समस्याओं और कुरीतियों की जड़ मानने लगे और पानी पी–पीकर हमारे समाज को गालियाँ देना अपना कर्तव्य समझने लगे हैं। और स्वयं राजपूत समाज की वर्तमान पीढ़ी किंकर्तव्यविमूढ़ होकर यह समझने का प्रयास कर रही है कि क्या वास्तव में हमारे पूर्वज इतने निकृष्ट थे? अब तो शासक वर्ग, मनोरंजन जगत, कवियों और साहित्यकारों ने राजपूतों को आलोचनाओं से इतना भर दिया कि इस पीढ़ी की स्थिति विद्रोही सी होने लगी है। क्षत्रिय युवा न तो स्वयं की हीनता स्वीकार कर सकता है और न ही उन महान आदर्श, सिद्धान्त और इतिहास को जान पा रहा है, जो उसके पूर्वज उसके लिए धरोहर के रूप में छोड़ गये हैं। उदाहरण के लिए मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी का बलिदान और राजा दाहिर की पुत्रियों सूर्या देवी और परिमला देवी के बलिदान की कहानी मैंने बचपन में एक पुस्तक में पढ़ी थी और मेरे मस्तिस्क में वे कहानियाँ सुषुप्तावस्था में ही सही परन्तु विद्यमान थी। किन्तु एक दिन जब मैंने सोशल मीडिया पर इन वीरांगनाओं के बलिदान को अत्यन्त विकृत मानसिकता के साथ परोसते हुए पाया तो मैं हतप्रभ रह गई। उस दिन मैंने अनुभव किया कि आज का युवा तो उन्हीं कहानियों को अपना इतिहास मान रहा है। वो अपने शील का संरक्षण करते वीर क्षत्राणियों के शौर्य और बलिदान का यथार्थ स्वीकार कर पाने में असमर्थ है। दूसरी ओर सोशल मीडिया इन्हें जिस रूप में प्रस्तुत कर रहा है, आज के परिप्रेक्ष्य में उसका मस्तिस्क उस रूप को सहज स्वीकार भी कर लेगा और वो बड़ी आसानी से मान लेगा कि इतिहास में उनकी क्षत्राणियों की सुन्दरता ने दो राज्यों में युद्ध करवा दिया और युद्ध रुकवाने के लिए उसे जहर देकर मार दिया गया।

अब ऐतिहासिक प्रसंग की उस गलत व्याख्या से क्षत्रिय विरोधी खेमे के दो मंसूबे पूरे होते हैं। प्रथम कि क्षत्राणियाँ अपने सौन्दर्य का प्रयोग राजनैतिक कूटनीति के लिए करती थीं और दूसरा, क्षत्रिय अपने स्वार्थ के लिए बहन–बेटियों पर अत्याचार करते थे। जबकि वास्तविकता में क्षत्राणियों के लिए स्वाभिमान व आत्म–सम्मान के आगे सुन्दरता का कभी मोल नहीं रहा जिसका सर्वविदित उदाहरण क्षत्राणियों द्वारा किये गये 'जौहर' हैं। यहाँ तक कि हमने अपने बड़ों से सुना कि हमारे समाज में कन्या को देखकर नकारा नहीं जा सकता था, इससे भी ऊपर का आदर्श तो यहाँ तक सुना गया है कि ''राजपूत की बेटी को देखना क्या है।''

अर्थात् वो राजपूत की बेटी है, बस इतनी पहचान

ही पर्याप्त होती थी। उस समाज में सौन्दर्य की क्या अहमियत रही होगी किन्तु प्रसंगों को तोड़कर प्रस्तुत करने से ठाकुर वर्ग से नफरत को फैलाना आसान हो जाता है। इसी प्रकार राजकुमारी सूर्या देवी व परिमला देवी को जिन्होंने वास्तव में तो अरब पहुँच कर अपने शील की रक्षा करते हुए दुष्ट खलीफा हज्जाज बिन युसुफ को जरिया बनाकर आक्रमणकारी लूटेरे मोहम्मद बिन कासिम को बैल की खाल में सिलवाकर मरवा दिया और इस प्रकार अपने राज्य के विनाश का बदला लेकर आत्मोत्सर्ग कर दिया, उन्हें भोग्या और दासी के रूप में प्रस्तुत कर कहा गया कि उनकी हत्या कर दी गई। अम्बर से भी ऊँचे साहस और आदर्श जिनकी शब्दों में व्याख्या तक नहीं हो सकती, उन्हें अत्यन्त निकृष्ट रूप में पेश करता है यह सोशल मीडिया। क्योंकि वो जानते हैं कि क्षत्रियों के यथार्थ इतिहास को उनके वशंजों के समक्ष रख दिया गया तो ये युवा पीढ़ी अपने पुराने आदर्शों की खोज में निकल पड़ेगी। जो युवा क्षत्रिय तिलक, मोली, पगड़ी और मूंछ मात्र में बदहवास-सा अपना अस्तित्व ढूंढ रहा है, वो समझ जायेगा कि ये तो संकेत मात्र है, उसका वास्तविक चरित्र तो उसके आदर्शात्मक जीवन और उन आदर्शों के लिए सर्वस्व समर्पण में छुपा है। इन्हें डर है कि कहीं वो पुनः उसी आदर्शवाद की ओर न चल पड़ें क्योंकि उसके भीतर सुषुप्त क्षत्रियोचित संस्कार, हल्का-सा संकेत पाते ही उसे उस ओर बढ़ने के लिए प्रेरित ही नहीं, बाध्य भी करेंगे। इसलिए जहाँ तक सम्भव हो उनका प्रयास रहता है कि क्षत्रिय युवाओं को उनके यथार्थ इतिहास और गौरवपूर्ण आदर्शों से परे ही रखा जाए। वो अपने मंसूबों में सतत् प्रयासरत हैं। किन्तु यहाँ अब मैं उसी लेखक का पुनः जिक्र करना चाहूँगी। हमारे सम्पूर्ण समाज को आभारी होना चाहिए ऐसे लेखकों का जो बप्पा रावल को सिकन्दर से भी महान् व उच्च कोटि का योद्धा तथ्यों द्वारा सिद्ध करते हैं। जो कि वास्तव में थे भी किन्तु तथाकथित प्रशासन, इतिहासकारों व लेखकों ने उनकी शौर्यगाथा प्रस्तुत करना तो दूर उनका नाम तक विलुप्त कर दिया। श्रीमान् ओम रत्नू जो यह बताते हैं कि जयपुर रियासत ने मुगलों से संधि कर हिन्दू धर्म का किस प्रकार संरक्षण किया। कुल मिलाकर इन्होंने क्षत्रियों के युद्ध व संधि दोनों को ही तात्कालीन परिप्रेक्ष्य में देखा और पुनर्व्याख्या कर उनको तथ्यात्मक ढंग से सही सिद्ध भी किया। हमारे समाज को चाहिए कि सामाजिक मंचों पर सदैव राजनेताओं को ही नहीं बल्कि ऐसे लेखक जो सम्पूर्ण समाज को एकीकृत कर उसे सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए प्रयासरत हैं, वो गायक, कवि, साहित्यकार जो निष्पक्ष भाव से हमारे युवा क्षत्रियों को उनके गौरवपूर्ण इतिहास से परिचय करवाकर उसे पुनः शक्ति संचय करने, आत्म-सम्मान संरक्षण और अस्तित्व को जीवन्त रखने के लिए प्रयासरत हैं, उन्हें आमंत्रित व सम्मानित करना चाहिए। साथ ही इस प्रकार की पुस्तकों का अधिकाधिक प्रकाशन भी हो जो हमारे इतिहास को छोटी-छोटी सचित्र कहानियों के रूप में प्रस्तुत कर सकें। बालमन अधिकतम अधिगम क्षमता रखता है। सचित्र कथाएँ उसके मस्तिस्क में स्थायी रूप से स्थापित हो जाती हैं और उनके साथ ही घर कर जाते हैं वो संदेश जो इन कहानियों के माध्यम से उसे बचपन में प्राप्त होते हैं। शिन-चैन (कार्टून) की माँ जब उसके पिता को पीटती है तो उसे देखकर हंसने वाले बालक या बालिका के लिए पति-पत्नी के आदर्श बंन्धन की कल्पना करना या भविष्य में उनसे इसकी अपेक्षा रखना सम्भव नहीं है। अतः हमें बाल साहित्य से लेकर गीत, संगीत, कविता आदि सभी माध्यमों से अपने इतिहास की सकारात्मक व्याख्या और आदर्शों के लिए आत्मोत्सर्ग करने वाले महान् चरित्रों को हमारे बच्चों व युवाओं को उपलब्ध करवाना चाहिए। साथ ही ऐसी रचनाओं का अधिकाधिक क्रय कर इन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए और उनके निर्माताओं व रचनाकारों का विभिन्न मंचों व माध्यमों से आभार प्रकट करना चाहिए।

धन साधन है या साध्य?

– स्वामी चिदानन्द जी

बृहस्पतिस्मृति में एक श्लोक है-

आदरेण यथा स्तौति धनवन्तं धनेच्छया।
तथा चेद्विश्वकर्तारं को न मुच्येत बन्धनात्।।

'धन की इच्छा से मनुष्य जैसे आदर और विवेक से धनवान् की सेवा-स्तुति करता है, वैसे ही ईश्वर-प्राप्ति की इच्छा से विश्वरचयिता भगवान् की सेवा करे तो जन्म-मृत्यु के बन्धन से छूट जाय।' श्री भर्तृहरि ने एक प्रसंग में कहा है-

'न रम्यं नारम्यं प्रकृतिगुणतो वस्तु किमपि।'

अर्थात् 'जगत् में कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जो स्वभाव से ही अच्छी या बुरी हो।' अच्छी-बुरी वस्तु बनती है उसके उपयोग के अनुसार। अणुशक्ति से लोकसुख के कार्य भी हो सकते हैं और अणु बम से निरीह लाखों प्राणी मारे भी जाते हैं। साँप दूध पीता है तो उससे जहर पैदा होता है और वह मनुष्यों के प्राण हरता है। वही दूध एक बालक को पिलाया जाय तो उससे बालक के शरीर का गठन होता है। इसी प्रकार धन स्वभाव से बुरा नहीं है, उसका दुरुपयोग ही उसे बुरा बनाता है और उसी से मनुष्य का अधःपतन होता है; यदि सदुपयोग होता है तो उससे मनुष्य की उन्नति होती है। धन का उपयोग जहाँ तक साधन के रूप में होता है, वहाँ तक वह हानिकारक नहीं होता, पर यदि धन को साधन के बदले साध्य के सिंहासन पर बैठा दिया जाता है तो वह निश्चय ही मनुष्य का पतन कराता है।

यह बात तो सर्वसम्मत है कि मनुष्य जीवन का ध्येय भगवत्प्राप्ति है; क्योंकि दूसरे किसी भी शरीर में भगवत्प्राप्ति की योग्यता नहीं है, जब कि विषय-सुख तो चौरासी लाख योनियों में अपने-आप मिल जाता है। अतएव भगवत्प्राप्ति को ही जीवन का ध्येय मानकर जीवन-निर्वाह के साधन के तौर पर न्याय और धर्म के अनुसार धन कमाना बुरा नहीं है, वरन् कमाना अत्यन्त आवश्यक है। पहले भी और आज भी, धन के बिना जीवन-निर्वाह नहीं हो सकता। इसी से अर्थ को भी एक पुरुषार्थ बताया गया है। जो मनुष्य अपना निर्वाह भी नहीं कर सकता, वह दूसरों की सहायता कैसे कर सकता है? अपना निर्वाह करते हुए, दूसरे की सहायता करना-यह भी जीवन का एक बड़ा लाभ है। एक श्लोक है-

भिक्षुका नैव भिक्षन्ति बोधयन्ति गृहे गृहे।
दीयतां दीयतां लोका अदातुः फलमीदृशम्

भावार्थ यह कि-भीख माँगने वाले भीख नहीं माँगते, वे तो घर-घर यह शिक्षा देते हैं कि भाई! दान करो, दान करो, इस जन्म में दान न करोगे तो इस समय जैसी हमारी स्थिति है, वैसी ही तुम्हारी भी हो जायगी। इस चातुर्मास में नहीं बोओगे तो वर्ष भर क्या खाओगे? हम लोगों ने पूर्व जन्म में दान नहीं किया, इसी से आज भीख माँग रहे हैं- इस प्रत्यक्ष उदाहरण से शिक्षा ग्रहण करो।

यहाँ तक हमने देखा कि जीवन निर्वाह के लिये धन अत्यन्त आवश्यक है; परन्तु उसकी प्राप्ति होनी चाहिये सन्मार्ग से। धन की प्राप्ति सन्मार्ग से ही क्यों करनी चाहिये, यह विषय विशेष विचारणीय है। जिस किसी प्रकार से प्राप्त किया हुआ धन क्या धन नहीं है? बैंक में उसका ब्याज भी उतना ही मिलता है, जितना न्यायोपार्जित धन का। व्यवहार में वह धन न्यायोपार्जित धन से जरा भी कम काम नहीं देता। उत्तर में निवेदन है कि ये विचार केवल स्थूल दृष्टि के हैं। इनमें सूक्ष्म विचार और दूरदर्शिता नहीं है। अब देखिये-शास्त्रों ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-ये चार पुरुषार्थ बतलाये हैं। यहाँ परम पुरुषार्थ मोक्ष है। पिछले तीनों पुरुषार्थ अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति में बाधक

हों, ऐसे नहीं होने चाहिये। जीवन धर्मपरायण नहीं होगा तो परम पुरुषार्थ की प्राप्ति होगी ही नहीं यह प्रत्यक्ष है। इस पुरुषार्थ चतुष्टय का समन्वय इस प्रकार है कि जो मनुष्य धर्म से अर्थ की प्राप्ति करके उस अर्थ का उतना ही उपयोग करता है, जितना जीवन-निर्वाह के लिये आवश्यक है, वह चतुर्थ पुरुषार्थ को थोड़े ही प्रयास में सिद्ध कर सकता है। मनुस्मृति में तो कहा है कि 'अधर्म से प्राप्त किया हुआ धन कुछ दिन रहकर फिर न्यायोपार्जित धन को भी साथ लेकर नष्ट हो जाता है।' यदि कदाचित् ऐसा होने के पहले ही शरीर छूट जाता है तो वह धन तो यहीं पड़ा रह जाता है और जीवन में किये हुए पाप के फलस्वरूप यातना-शरीर धारण करना पड़ता है। अतएव अधर्म से प्राप्त किया हुआ धन बैंक में चाहे सुन्दर मालूम हो, पर वह है विष से भरे हुए सोने के घड़े-जैसा- **'विष रस भरा कनक घटु जैसें।'**

अब धर्म से धन प्राप्त करने का अभिप्राय भी समझना चाहिये। मनु महाराज ने धर्म के दस अंग बतलाये हैं; परंतु धन के उपार्जन में तो उनमें से दो ही अंगों का पूरा पालन हो जाय तो बहुत है। इनमें पहला अंग है- **'अस्तेय'**। स्तेय कहते हैं चोरी को, अतः अस्तेय का अर्थ है 'चोरी न करना।' किसी की अनुपस्थिति में या नजर चुराकर उसकी वस्तु को ले लेने का नाम ही चोरी है, ऐसी बात नहीं है। दूसरे के जरा-से हक को ले लेना भी चोरी है। यहाँ तक कि, दूसरे की वस्तु की ओर ललचायी नजर से देखना भी चोरी ही है। श्रुति में इसीलिये कहा गया है- **'मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।'** व्यापारी उचित से अधिक मुनाफा ले, यह भी चोरी है। माप-तौल में कम दे-ज्यादा ले ले, ख़रीददार की गरज समझकर अधिक पैसा वसूल कर ले, अच्छा नमूना दिखाकर चाहे जैसा माल दे दे-ये सभी चोरी हैं। बलवान् राजा उचित से अधिक कर वसूल करे और इसके लिये प्रजा को सताये, यह भी एक प्रकार की डकैती है। काला बाजार, रिश्वतखोरी और अनुचित रूप से धन की वसूली करने वाले चाहे जेल में न हों पर वे हैं तो चोर-डाकू ही। इस प्रकार सभी क्षेत्रों में मजदूर से लेकर प्रधान पदों तक में, जो कोई भी अपने उचित हक से अधिक लेते हैं और उचित से कम काम करते हैं, वे सभी चोर कहलाते हैं।

दूसरा अंग है- **'अपरिग्रह'**। संग्रह को ही परिग्रह कहते हैं। अतएव अपरिग्रह का अर्थ हुआ 'संग्रह न करना'। आज का अन्न-संकट, वस्त्र संकट और अन्य प्रायः सभी संकट परिग्रह के पाप से ही प्रकट हुए हैं और उसी से पनप रहे हैं। परिग्रह बड़ा पाप है, यह समझकर कल्याणकामी पुरुषों को संग्रह खोरी से दूर ही रहना चाहिये।

धर्म के इन दो अंगों पर यदि सारी जनता ध्यान रखे तो देश का दुःख अवश्य दूर हो जाय। परंतु जब तक इसके लिये दृढ़ निश्चय के साथ व्यक्तिगत प्रयत्न नहीं होगा, इस दुःख से प्रजा को रोते ही रहना पड़ेगा। भगवान् सबको सन्मति दें।

अब यह देखना है कि धन को यदि साध्य व जीवन का ध्येय मान लें तो वह किस प्रकार हानिकारक होता है। चित्त का ऐसा स्वभाव है कि वह जिस वस्तु का चिन्तन करता है, उसी आकार का बन जाता है। अतएव यदि धन को ही जीवन का ध्येय बना लेंगे तो जीवन का सारा समय धन के चिन्तन में ही जाएगा और परिणाम में चित्त के ध्येयाकार बन जाने पर धन के सिवा दूसरी चीज अच्छी लगेगी ही नहीं। शास्त्र में कहा गया है-

जगल्लुब्धा धनमयं कामुकाः कामिनीमयम्।
नारायणमयं धीराः पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।।

भाव यह कि धन ही जिसका ध्येय है, वह जगत्भर को धन-संग्रह के एक साधन रूप में देखता है, उसे धन के सिवा दूसरी दृष्टि ही नहीं है। कामी पुरुष जगत् को स्त्री-प्राप्ति के साधन रूप में देखता है। धीर साधक पुरुष ईश्वर-प्राप्ति को जीवन का ध्येय बनाता है; इसलिये वह ज्ञान की आँखों से जगत् को नारायण रूप देखता है।

जब मनुष्य के सारे व्यापार-सारी चेष्टाएँ केवल धन की प्राप्ति के लिये ही होती हैं, तब उसका अधःपतन किस

प्रकार होता है, इसे भगवान् ने गीता के दूसरे अध्याय में विशद रूप से समझाया है। वहाँ कहा है-मनुष्य जब धन को (मूल में 'विषय' शब्द है पर मनुष्य धन की प्राप्ति इसीलिये करता है कि उससे भोग मिलते हैं) जीवन का ध्येय बनाता है, तब उसका चित्त हर समय धन का ही चिन्तन करता है। चिन्तन करते-करते उसी में आसक्ति हो जाती है। आसक्ति से उसको प्राप्त करने की प्रबल कामना जाग उठती है, कामना में प्रतिरोध होने पर अर्थात् इच्छित वस्तु की प्राप्ति में विघ्न आने पर क्रोधाग्नि भभक उठती है, क्रोध से विवेक का नाश हो जाने पर कर्तव्याकर्तव्य का भान नहीं रहता। ऐसा होने पर सारासार, धर्माधर्म या नीति अनीति के विचार ही मन में नहीं आते। परिणाम में मनुष्य का मनुष्यत्व मिट जाता है और वह क्या बन जाता है- यह कहा नहीं जा सकता। उसे क्या कहना चाहिये- 'तेके नजानीमहे।' यह बात समझ में नहीं आती-उसका सर्वनाश हो जाता है।

समस्त पाप इस विषय-लालसा से ही होते हैं। यह विषयों की लालसा और विषयों की प्राप्ति के लिये धन की लालसा धन इकट्ठा करने से नहीं मिटती। ज्यों-ज्यों धन का ढेर लगता जाता है, त्यों-ही-त्यों अधिक-से-अधिक प्राप्त करने की तृष्णा भी बढ़ती ही जाती है। धन से या विषय-भोग से किसी का मन भरा हो, ऐसा भूतकाल में भी कभी नहीं सुना गया, फिर आज के भोग परायणकाल में तो ऐसा होगा ही कैसे?

'बुझे न काम अगिनि तुलसी कहुँ, बिषय-भोग बहु घी ते।।'

भगवान् ने कहा है लालसा-कामना को तो मार ही डालना चाहिये। उसे मारे बिना अर्थात् वैराग्य के द्वारा उसका दमन किये बिना उसके बन्धन से छूटने का दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

जीवन-निर्वाह के साधन रूप में धन की प्राप्ति को शास्त्रों ने निन्दित नहीं बतलाया है; बल्कि उसकी तो आवश्यकता बतलायी है। शास्त्रों ने तो निन्दा की है धन को ही जीवन का ध्येय बना लेने की और उसकी अनर्गल लालसा की। पर जिसकी बुद्धि सारासार का निश्चय करने में समर्थ नहीं रह गयी है, उसका ध्यान शास्त्रों की चेतावनी की ओर जाना बहुत कठिन है। एक जगह कहा है-

जनयन्त्यर्जने दुःखं तापयन्ति विपत्तिषु।
मोहयन्ति च सम्पत्तौ कथमर्थाः सुखावहाः।।

अर्थात् धन के अर्जन में दुःख है, विपत्तिकाल में- युद्ध, राज्य-क्रान्ति, महामारी, अग्नि प्रकोप, बाढ़ तथा भूकम्प आदि के समय धन अत्यन्त संतापदायक बन जाता है। ऐसे समय धनवान् की स्थिति बड़ी करुणाजनक हो जाती है। इसी प्रकार जब बहुत अधिक परिमाण में धन इकट्ठा हो जाता है, तब वह मनुष्य की बुद्धि को नष्ट कर देता है। जिससे वह एक उन्मत्त नशेबाज के सदृश आचरण करने लगता है और फलतः भयंकर विपत्तियों में फँस जाता है, ऐसी अवस्था में धन को कब सुख देने वाला समझा जाय? शास्त्रकार कहते हैं-

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

धन की तीन गति होती है-उत्तम गति है धन का परोपकार-दान-पुण्य आदि में सद्व्यय करना, मध्यम गति है- अपने उपयोग में लाना। जो धनी अपने धन का इन दो प्रकारों से उपयोग नहीं करता, उसके धन की तीसरी गति ही होती है। किसी भी मार्ग से उसके धन का नाश हो जाता है।

यहाँ जो धन को अपने उपयोग में व्यय करने की बात कही गयी है, यह विशेष विचारणीय है। धन की अधिष्ठात्री देवी है- श्री लक्ष्मीजी। लक्ष्मी भगवान् की अर्धांगिनी हैं। भगवान् परम पिता हैं। वे सबकी माता हैं। वे यदि अपने घर पधारें तो हम उन्हें अपनी भोग्या न मानकर माता मानें और भगवान् की सेवा में लगा दें। यही कर्तव्य है। अर्थात् अपने निर्वाह के योग्य धन का अपने लिये उपयोग करें, शेष सारा धन जनता रूपी जनार्दन की सेवा में लगा देना चाहिये। मनुष्य का जीवन भोगमय न होकर त्यागमय होना चाहिये। धन का उपयोग भोग-सामग्री संग्रह

करने में नहीं होना चाहिये। मनुष्य बेसमझी के कारण ही भोग-सामग्री इकट्ठी करता है। मनुष्यमात्र सुख की इच्छा करता है और इसीलिये उसकी सारी प्रवृत्तियाँ सुख प्राप्ति के लिये ही होती हैं। वह समझता है कि भोग-सामग्री का जितना अधिक संग्रह होगा, उतना ही अधिक सुख होगा। पर होता है इससे विपरीत। ज्यों-ज्यों भोग के साधन बढ़ते जाते हैं- त्यों-ही-त्यों भोग-तृष्णा अधिक-से-अधिक उग्र बनती जाती है और यह तृष्णा ही संसार में बड़ी-से-बड़ी विपत्ति है। सुख भोगमय जीवन में कदापि नहीं है। सुख है- त्यागमय जीवन में। जिस मनुष्य की आवश्यकता जितनी ही थोड़ी है, उतना ही वह अधिक सुखी है। अतः जो मनुष्य सुखी जीवन बिताना चाहता हो, उसे धीरे-धीरे अपनी आवश्यकताओं को कम करना चाहिये और संतोषवृत्ति की शिक्षा लेनी चाहिये। **'यदृच्छालाभसंतुष्टः'** गीता के इस महावाक्य को जीवन में उतारना चाहिये। श्री तुलसीदासजी के कथनानुसार 'यथालाभ संतोष सुख' की वृत्ति बनानी चाहिये। भोगों के भोग में तो चित्त व्यग्र ही रहता है। उससे सुख-शान्ति का अनुभव नहीं हो सकता। पर संतोष से चित्त शान्त रहता है और उस समय सुख-शान्ति का अनुभव होता है। पातञ्जलयोगदर्शन में भी कहा है-

संतोषादनुत्तमसुखलाभः। (2/42)

अर्थात् जिससे बढ़कर दूसरा न हो ऐसा अप्रतिम सुख प्राप्त करना हो तो संतोषवृत्ति को धारण करना चाहिये। 'संतोष ही सुख है'- यह एक महामन्त्र है, इसको सतत् स्मरण रखना चाहिये।

इस छोटे-से निबन्ध में हमने देखा कि जीवन-निर्वाह के साधन के तौर पर धन कमाना आवश्यक है। परंतु धन की प्राप्ति ही जीवन का ध्येय नहीं बन जाना चाहिये। फिर, धन की प्राप्ति भी न्याय और नीति के मार्ग से ही होनी चाहिये। अन्याय और अधर्म से आया हुआ धन नरकों में ले जाता है। साथ ही धन का उपयोग भी भोग-सामग्री के संग्रह में नहीं होना चाहिये। परंतु अपने उपयोग के आवश्यक धन के अतिरिक्त शेष धन को परोपकार में लगाना चाहिये। भौतिकवादियों का सिद्धान्त इससे सर्वथा उलटा है, वे कहते हैं- 'Do not curtail your wants, but try to attain them.' 'तुम अपनी आवश्यकताओं को घटाओ मत, पर उन्हें प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करो।' आवश्यकताओं को ज्यों-ज्यों पोषण मिलेगा, त्यों-त्यों वे बढ़ती ही जाएँगी और इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयत्न में ही बीत जाएगा। इतने पर भी आवश्यकताओं की प्राप्ति अधूरी ही रहेगी। इसी का नाम निष्फल जीवन है और इसी से हमारे लिये यह सिद्धान्त उपयोगी नहीं है।

अब, जीवन-निर्वाह कैसे करें? इसको योगवासिष्ठ के इस एक श्लोक से समझना चाहिये-

आहारार्थं कर्म कुर्यादनिन्द्यं
कुर्यादाहारं प्राणसन्धारणार्थम्।
प्राणाः सन्धार्यास्तत्त्वजिज्ञासनार्थं
तत्त्वं जिज्ञास्यं येन भूयो न दुःखम्।।

शरीर है, इसलिये उसके निर्वाहार्थ न्यायमार्ग से धन कमाना चाहिये। शरीर को बनाये रखने के लिये आवश्यक आहार-विहार करना चाहिये। 'खान-पान के लिये जीवन नहीं, पर जीवन के लिये खान-पान है' इस सूत्र को याद रखना चाहिये। जीवन को बनाये रखना चाहिये भगवत्प्राप्ति के लिये और भगवत्प्राप्ति इसी जीवन में कर लेनी चाहिये, जिससे पुनः गर्भवास का दुःख न भोगना पड़े। यह नियम जैसे व्यक्ति के लिये सुखरूप फल देने वाला है, वैसे ही समष्टि के लिये भी। जो व्यक्ति या समाज इसका पालन करेगा, उसे दुःख नहीं भोगना पड़ेगा।

●

धन कुबेर तुम अपनी कृपा से मनुष्य को नर-पिशाच बना देते हो। तुम्हें नमस्कार है।

- सुभाषित

मुगल साम्राज्य के चर्मोत्कर्ष काल में प्रेरणादायी पीथल

– डॉ. मातु सिंह मानपुरा

देवाराधना से पूर्व संकल्प लेने के लिये उच्चारण किया जाने वाला मंत्र 'जम्बूद्वीपे, भरतखंडे, आर्यावर्ते, भारत वर्ष........।' सनातन संस्कृति के वैभव और स्वाभिमान का परिचायक है। प्राणीमात्र के हितार्थ 'परित्रणाय साधूनाम विनाशायच दुष्कृताम्' का संदेश देने वाली ऋषि-मुनियों की इस वसुंधरा पर सुख-सम्पन्नता का साम्राज्य रहा। प्राचीन समय से लेकर वर्तमान तक असुर प्रवृति वाले आक्रान्ताओं के आक्रमणों का सामना करना यहाँ के निवासियों के लिए अभिशाप के समान रहा है। देवस्थलों को तोड़ने का प्रयास एवं जनसंहार विदेशियों की विकृत मानसिकता का पहला लक्षण था लेकिन भारतीय स्वाभिमानी योद्धाओं ने अपना बलिदान देकर इस क्षेत्र की रक्षा की तथा समय-समय पर हिमालय के उस पार तक इन आक्रान्ताओं का दमन किया। काल एवं परिस्थितियों के कारण कई बार ये सनातन विरोधी राजनैतिक रूप से साम्राज्य स्थापित करने के अपने मनसूबों में सफल हुये लेकिन इस महान् भारतीय संस्कृति को निगला नहीं जा सका। यद्यपि ऋषि-मुनियों द्वारा रचित वेद, उपनिषद एवं पौराणिक ग्रंथों को जलाया गया और वैभवशाली वास्तुकला को खण्डहरों में परिवर्तित किया गया लेकिन राष्ट्राभिमान की ज्योति को प्रज्जवलित रखने वाली इस देवधरा ने अपने मूलमंत्र 'स्वाभिमान' को विस्मृत नहीं किया। सातवीं शताब्दी के पश्चात विशाचवृति के लुटेरे गजनी, गोरी, गुलाम, खिलजी, तुगलक, लोदी एवं मुगल आदि नामों से दिल्ली को केन्द्र बनाकर भारतीय स्वाभिमान को चुनौती देने में आंशिक रूप से सफल हुये लेकिन देश के विभिन्न क्षेत्रों में क्षत्रियों द्वारा शासित सुदृढ़ राज्यों के शासकों ने अपना बलिदान देकर जनसामान्य की रक्षा की तथा स्वाभिमान की अखण्ड ज्योति को प्रज्जवलित रखा। मुगलों ने प्रारम्भिक काल में यहाँ के शासकों से सम्मानपूर्ण समझौते करने का दिखावा किया, स्थानीय शासकों को उनके राज्यों में पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की लेकिन अवसर आने पर इन विदेशियों ने अपनी विकृत मानसिकता का परिचय दिया। छद्म-भेषि, कुटिल प्रकृति के मुगल बादशाह अकबर ने अपने दरबार में नवरत्नों के रूप में साहित्यकारों को संरक्षण दे रखा था लेकिन उनमें से अधिकतर उसकी प्रशंसा में ही अपना बुद्धिकौशल खर्च करते रहे। चाटुकार इतिहासकारों ने उसे महान् बताने के लिए सत्य-असत्य तथ्यों को संकलित किया। कवियों की वाणी ने उसे सभी धर्मों का संरक्षक बताया। सत्य कहने वालों को प्रताड़ित कर मुगल दरबार से निकाल दिया गया या कवि गंग की तरह मृत्युदण्ड दिया गया। मुगल दरबार के विद्वान साहित्यकारों में बीकानेर के स्वाभिमानी सपूत महाराजा राय सिंह के अनुज महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ 'पीथल' भी उपस्थित रहते थे। इतिहास एवं साहित्य के कई ग्रंथों में उन्हें नवरत्नों में सम्मिलित बताया है।

मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा वि.सं. 1606 में जन्में पीथल स्वाभिमानी साहित्यकार होने के साथ एक कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। मुगल दरबार के साहित्यकारों में अकबर की प्रशंसा में एक भी शब्द न लिखने वाले एकमात्र कवि पीथल ने उसकी निंदा करने के एक भी अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया। गागरोनगढ़ के सुबेदार एवं मुगलों के विभिन्न अभियानों का नेतृत्व करने वाले मरुधरा के स्वाभिमानी सपूत पीथल सनातन धर्म के रक्षक वीर योद्धाओं को प्रोत्साहित करते रहते थे। इस बहुमुखी प्रतिभा के धनी का तन मुगल दरबार में था तो मन व आत्मा मुगल साम्राज्य को उखाड़ फेंकने वाले स्वदेशाभिमानी योद्धाओं के साथ थी। इतिहास के शोधकर्ता इस तथ्य को

भलीभाँति जानते हैं कि जब राष्ट्रप्रेमी महाराणा प्रताप मुगल साम्राज्य के दबाव में आत्मसुरक्षा नीति का अनुशरण करते हुये राजमहल को छोड़कर पहाड़ों की कंदराओं में निवास कर संसाधन जुटा रहे थे। उस समय वे संकट में थे लेकिन आधीनता स्वीकार न करने का संकल्प यथावत था। ऐसे ही संधिकाल में मुगल सेनापति ने अपनी रिपोर्ट मुगल बादशाह को भेजते हुये लिखा, इस समय साधनहीन महाराणा प्रताप संकट ग्रस्त है और सम्भव है कि कुछ समय बाद वो आधीनता स्वीकार करने को तैयार हो जाये। लगभग सम्पूर्ण भारत का शासक लेकिन अन्तर्मन से कमजोर अकबर इस अकल्पनीय संदेश से रोमांचित हो उठा। महाराणा प्रताप एवं अन्य स्वाभिमानी योद्धाओं के पक्षधर पीथल को यह संदेश सुना कर अपनी कुंठाग्रस्त भावना को उजागर करना चाहा। बादशाह अकबर ने कहा कि जिस महाराणा प्रताप की तुम प्रशंसा करते रहते हो वह मेरी आधीनता स्वीकार करने वाला है, यदि विश्वास नहीं है तो यह पत्र पढकर देखो। कुशाग्रबुद्धि पीथल समस्त तथ्यों को समझ गये लेकिन संवाद को सकारात्मक स्वरूप देते हुये कहा यह पत्र तो मुझे जाली लगता है, यदि आपकी आज्ञा हो तो पत्र की सत्यता की जानकारी करवा लेते हैं। स्वीकृति देने के अतिरिक्त अकबर के पास विकल्प भी नहीं था। स्वाभिमान के भावनात्मक सहयोगी सूरचंद टापरिया को बुलाकर चार पंक्तियाँ प्रत्युत्तर की आशा के साथ लिखकर दे दी –

पातल, जो पतसाह बोलै, मुख हुंता बयण।
मिहर पिछम दिस माहं, ऊगै कासपरावउत।।
पटकूं मूंछा पाण, कै पटकूं निज तन करद।
दीजे लिख दीवाण इण दो महली बात इक।।

(भावार्थ– हे महाराणा! यदि आपने अकबर को अपने मुख से बादशाह कहा, तो समझ लो सूर्य पश्चिम दिशा में उदय होने लगा है। हे दीवान! मैं अपनी मूंछों पर ताव दूँ या अपनी तलवार से ही आत्मघात कर लूँ? इन दो में से एक बात लिख भेजना।) इस ऐतिहासिक पत्र की चार पंक्तियों ने स्वाभिमान के अँगारे पर आयी परिस्थितियों की राख को उड़ा दिया संदेश प्राप्त होते ही दृढ संकल्पित राणा ने महाराज पृथ्वीराज के ऐतिहासिक पत्र का जवाब भी उन्हीं की आशा के अनुरूप स्वाभिमान के साथ लिखवा भेजा–

तुरक कहासी मुखपतो, इण तन सूं इकलिंग।
ऊगै जाही ऊगसी, प्राची बीच पतंग।।
खुशी हूत पीथल कमध, पटको मूंछा पाण।
पछटण है जेतै पतो, कलमां सिर केवांण।।
सांग मूंड सहसी सको, सम जस जहर सवाद।
भड़ पीथल जीतो भलां बैण तुरक सूं वाद।।

(भावार्थ– भगवान शिव मेरे मुँह से अकबर को सदैव तुर्क (विदेशी) कहलायेगा। सूर्य जिस दिशा में उदय होता है उसी पूर्व दिशा में उदय होगा। हे पृथ्वीराज राठौड़! जब तक प्रताप अत्याचारियों के सिर पर अपनी तलवार से प्रहार करने को जीवित है, आप अपनी मूंछों पर निशंक ताव देते रहें। पराधीन राजागणों की कीर्ति मुझे जहर के समान लगती है। आधीनता स्वीकार करने की अपेक्षा प्रताप तो अपने सिर पर तलवारों के वार ही सहन करना पसंद करेगा। वीरवर पृथ्वीराज! आप चाहें तो तुर्क से वाद–विवाद में विजय प्राप्त करें)।

उपर्युक्त पत्र सीटी पैलेस के रायआंगन उदयपुर एवं सार्वजनिक म्यूजियम बीकानेर में दीवार पर सुशोभित है। मुगल दरबार में सम्मानित पदों पर रहते हुये स्वधर्म, स्वराष्ट्र एवं स्वाभिमान की रक्षा करना कठिन कार्य था लेकिन कूटनीतिज्ञ पीथल इसमें सफल हुये। महाकवि द्वारा महाराणा प्रताप की प्रशंसा में रचित अनेक साहित्यिक रचनाएं ऐतिहासिक ग्रंथों में उपलब्ध है –

माई अहड़ा पूत जण, जहड़ा राण प्रताप।
अकबर सूतौ ओझकै, जाण सिराणै सांप।।

(भावार्थ– हे माताओं! ऐसे पुत्रों को जन्म देवो जो राणा प्रताप जैसा हो, जिससे आतंकित होकर रात को

अकबर सोते हुये भी नींद में झिझकता है जैसे चारपायी के सिरहाने सांप आने से लोग झिझक उठते हैं।)

धर बांकी दिन पाधरा, मरद न मूंकै मांण।
घणा नरींदा घेरियो, रहै गरिंदा राण।।

(जिसकी भूमि विकट है लेकिन समय अनुकूल है और जो स्वाभिमान को कभी नहीं छोड़ता, वह महाराणा पहाड़ों में निवास करता हुआ भी राजाओं से घिरा रहता है।)

अइये अकबरियाह, तेज तुहाड़ो तुरकड़ा।
नम नम नीसरियाह, राण बिना सहराजवी।।

(हे विदेशियों की संतान अकबर! तेरा तेज गजब का है, जिसके सामने राणा प्रताप के अतिरिक्त सभी राजागण नतमस्तक हो गये हैं।)

सह गावड़िया साथ, एकण वाड़ै वाड़िया।
राण न मानी नाथ, तांडै सांड प्रतापसीं।।

(हे अकबर तूने सब राजारूपी बैलों को एक ही बाड़े में इकट्ठा कर लिया है लेकिन प्रतापरूपी सांड ने नाथ नहीं डलवायी है, वह निर्भीक होकर गरज रहा है।)

अकबर घोर अंधार, ऊंघाणा हिन्दू अवर।
जागै जग दातार, पोहरै राण प्रताप सी।।

(अकबर रूपी अंधेरे को रात्रि समझकर लगभग सभी हिन्दूशासक नींद लेने लगे हैं लेकिन स्वाभिमानी लोगों का मार्गदर्शक महाराणा अब भी मातृभूमि की रक्षा के लिए पहरा दे रहा है।)

मुगल साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष करने वालों को पीथल द्वारा प्रोत्साहित किये जाने की चर्चाएँ सभी राजा-रजवाड़ों एवं आमजन तक प्रचारित-प्रसारित थी। पृथ्वीराज की सहधर्मिणी वीर एवं विदुषि थी, 'सुरां घर सुरी महल कायर कायर गेह।' के अनुसार पति के प्रत्येक क्रियाकलाप से गर्वित थी लेकिन जब महाराणा प्रताप को संघर्ष विमुख न होने का पत्र लिखा तो पति प्रिया की चिन्ता बढ गई पति द्वारा पत्र लिखने के उद्देश्य को जानना चाहा। अटल विश्वास एवं दृढ व्यक्तित्व के धनी ने अपनी सहधर्मिणी को भी निसंकोच पिंगल भाषा में स्पष्ट लिख दिया-

जब ते सुने हैं बैन, तबते न मोकौ चैन।
पाती पढ नेक सौ न विलंब लगावैगो।।
लेके जमदूत से समत्थ रजपूत आज।
आगरै में आठों याम उधम मचावैगो।
कहै पृथ्वीराज, प्रिया नेकु उर धीर धरो,
चीरंजीवी रानो मलेच्छन को भगावैगो।
मन को मरद्द मानी प्रबल प्रतापसिंघ,
बब्बर ज्यों तड़प अकब्बर पै आवैगो।।

ऐतिहासिक तथ्य है कि अकबर महिलाओं के लिए एक मेले (मीना बाजार) का आयोजन करता था जिसे नौरोजा कहा जाता था। इस मेले में पुरुषों का प्रवेश वर्जित होने के उपरान्त भी अकबर स्वयं दासियों सहित मेला देखता था। एकबार संयोग-कुसंयोग ही था कि कविराज की सहधर्मिणी चंपादे जिसे कुछ इतिहास की पुस्तकों में किरणावती भी लिखा है, मेला देखने गई। मेले में परपुरुष के हाथ का स्पर्ष होते ही बलिष्ठ भुजाओं की चंपादे ने तत्काल गिरबान पकड़कर उसे नीचे पटक लिया और अपनी कमर से कटार निकाल ली। चेहरे से बुरका हटा तो पता लगा कि यह तो बादशाह अकबर है। कुछ ही क्षणों में यह घटना घटित हो गयी चंपादे ने क्रोधित होकर अकबर को सीखभरी फटकार लगायी तो उसने भविष्य में इस प्रकार के मेले का आयोजन करना बंद करवा दिया। कहा जाता कि करणीजी एवं राजबाई के इष्ट से नौरोजा बंद हुआ था। सार्वजनिक म्यूजियम बीकानेर में इस घटना का चित्र भी दीवार पर लगा है और इतिहास की पुस्तकों में यह दोहा भी लिखा हुआ है-

करणी सिंघणी सिंघ चढी, कर में खींच कटार।
भीख मांगता प्राण की अकबर हाथ पसार।।

मेवाड़ के प्रसिद्ध चारण कवि रामा सांदू चारण समाज के हित के लिए आऊवा नामक स्थान पर धरने में आये हुये थे। उन्हें जब यह जानकारी मिली कि अकबर की विशाल सेना मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिये आ गयी है तो धरना

स्थल को छोड़कर अपने सैनिकों सहित महाराणा की सहायतार्थ हल्दी घाटी में पहुंच गये। इस स्वाभिमानी युद्ध में मातृभूमि की रक्षा करते हुये रामा सांदू वीरगति को प्राप्त हुये। कविराज पीथल ने राष्ट्र प्रेमी इस वीर कवि की प्रशंसा में काव्य रचना कर उसे अमर कर दिया–

गयौ तूं भलां भलां तूं न गयौ।
चिन धिन तू सांदवा–धणी।।
जाडै आणी मांहेड़ो जाकळ।
उणी करण पातळ अणी।।
तँ लिय आहव राण त्रिजड़हथ।
ले लांघण सांसण न लिया।
सो है ससत्र सालिया सात्रव।
कंठ सो है न खालिया किया।।

(हे सांदू श्रेष्ठ! तेरा धरना देने जाना नहीं जाने के समान हो गया, तूं प्रताप की सेना की सहायतार्थ सेना लेकर आ पहुँचा। तूने सांसण के लिये लंघन करना छोड़ा और गले पर अपनी ही कटारी से घाव न कर (आत्महत्या न कर) तूने युद्ध में तलवार धारण कर शत्रु सेना का संहार किया, तू धन्य है।) पृथ्वीराज ने अत्याचारी विदेशी शासकों के विरुद्ध लड़ते हुये रामा सांदू का वीरगति प्राप्त होने के उदात्त गुणों को राष्ट्र प्रेमियों तक पहुँचा कर इसे संसार का श्रेष्ठतम कृत्य बताया। वीर योद्धाओं को मुगल साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित किया। पीथल की लेखनी से कल्लाजी रायमलोत का प्रसंग इतिहास प्रसिद्ध हुआ और इस घटना ने तत्कालीन राजनीतिक क्षेत्र में अपना प्रभाव दिखाया तथा साहित्य व सांस्कृतिक क्षेत्र में वर्तमान तक जिज्ञासापूर्ण शोध का विषय बना हुआ है। जोधपुर के शासक राव गंगा के वंशज और रायमल के पुत्र कल्लोजी सिवाना के शासक थे। स्वाभिमान के धनी कल्लोजी अद्धितीय वीर योद्धा थे। मुगल–मारवाड़ समझौते के अनुसार कल्लोजी ने मुगल फौजदार द्वारा अपमानजनक शब्द कहने के कारण उसकी गर्दन काट दी। मुगल सेना ने कल्लोजी की वीरता व सैन्यशक्ति को देखते हुये तत्काल कोई कार्यवाही नहीं की लेकिन उन पर मुगल सेना का आक्रमण होना निश्चित था। कल्लोजी ने मुगल छावनी से अपने पैतृक राज्य की तरफ प्रस्थान किया। पृथ्वीराज उस समय बीकानेर में उपस्थित थे। कल्लोजी उनसे मार्गदर्शन हेतु बीकानेर आये, कविराज को समस्त घटनाओं की जानकारी दी तथा पीथल से पूछा कि मैं किस प्रकार युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त होऊंगा? पीथल ने कहा, कल्लोजी आप हमारे वीरों के आदर्श होंगे और आप जितनी वीरता दिखायेंगे, मैं साहित्य में आपकी वीरता व पूर्ण युद्ध का वर्णन कर अमर कर दूँगा। कायरता न आपके पास है और न ही आप के युद्ध कौशल को देखने सुनने वालों के पास रहेगी। कल्लोजी ने जीते जी मरसिये (शोक व्यक्त करने वाली रचनाएं) सुनाने का आग्रह किया। कविराज ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये मरसिये सुनाये। सिवाना पर मुगल सेना का आक्रमण हुआ, एकबार कल्लोजी ने विजय प्राप्त की लेकिन दूसरी बार अपनों के द्वारा विश्वासघात करने के कारण वीरता का प्रदर्शन करते हुये कल्लोजी वीरगति को प्राप्त हुये। यह युद्ध की घटना एवं रचनाएं इतिहास तथा साहित्य की धरोहर हैं। डिंगल भाषा में रचित विस्तृत रचना की कुछ पंक्तियाँ बानगी स्वरूप प्रस्तुत हैं।

वढ चढ बोलियो पतसाह वदीतो, मंडोवर रख मांण मलीतो।
जिण जमवार लगे जस जीतो, कलो भलो रजपूत कहीतो।।
पुळियो दळ पारंभ पतसा है, सिंघ नेरसर बीड़ो साहै।
बकिया बयण तिके निरवाहै, गढ समियांण कलो पड़िगाहै।।

अनेक साहित्यकारों ने कल्लोजी की वीरता का वर्णन करने के लिये कलम उठायी है। राजस्थानी भाषा के मूर्धन्य विद्वान कोषकार व शोधवेता पं. बदरी प्रसाद साकरिया के सुपुत्र डिंगल भाषा के मर्मज्ञ भूपतिराम साकरिया ने लिखा है...सेना किले के भीतर प्रवेश कर गयी। यह देख कर रनिवास की सभी क्षत्राणियों ने तो

जौहर कर लिया पर कल्लाजी ने उस समय जो युद्ध किया वह अद्वितीय था। सिर कटजाने के बाद धड़ ने शत्रु सेना का वह धान निकाला जो आज तक सुनने में नहीं आया और अंत में वह वीर वि.सं. 1645 में वीरगति प्राप्त हुआ।' किसी स्वाभिमानी योद्धा का मुगलों के विरुद्ध विद्रोह के लिये कविराज पीथल मुगल फोजदारों की गलत नीति प्रमाणित करने में सिद्धहस्त थे इसलिये बादशाह भी कविराज के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की मानसिकता नहीं रखता था। वाद-विवाद का एक प्रकरण बहुत रोचक है। अकबर के अप्रिय बोल पर प्रथ्वीराज के छोटे भाई अमर सिंह (ठिकाणा हरदेसर तहसील सरदारशहर) स्वतंत्र होकर मुगल शासित क्षेत्र से धन-सम्पत्ति लूटने लग गये थे। अपने स्वतन्त्रता प्रिय बागी भाई का निडर होकर मुगल दरबार में पक्ष लिया। जिसका उल्लेख 'दयालदास री ख्यात' में निम्न प्रकार से किया गया है।- जिण दिनां अमर सिंघजी पातसाहजी सूं केई बोल माथै बारोटिया हुआ। तद आरबखां को हुकम दिया जो अमरू को पकड़ कर यहाँ ले आवो, तठै प्रिधीराजजी मालम करी जो हजरत आप सूं बेमुख है सुसजावार करणै जोग्य है अमरू हमारा भाई है पण गिरफदार होणे का नहीं दूसरा उसके ऊपर जायेगा सो मारया जायेगा। तद पातसाहजी कयो पकड्या आवैगा। प्रिथीराज जी कयो पकड़या नहीं अवैगा। हजरत सूं मालम हुई जो अमर सिंघ मारया गया है तद पातसाहजी प्रिथीराजजी नै बुलार कयो प्रिथीराज अमरू को पाणी देवौ तद कयौ हजरत नहीं देऊं बात झूठी है पीछे दूजी डाक लागी महाराज! आरब खां मारिया गया अमरसिंध का ऊपरला धड़ उड़ हौदे में शामिल हुआ जहां तैरै कटारी का वार हुआ तद पातसाजी कया या अल्ला आफारीवाद है अमरू के तांई हे पीथ! अमरू बड़ा हिन्दू था वो उडणा सेर था अरू पीथां तुम कुं भाई का भरोसा बहोत हो रहया था, सूं तू बी धन्य है तुमारा बचन बहोत नेक हुआ।'

महाकवि पृथ्वीराज राठौड पीथल द्वारा रचित वीररस की काव्य रचनाओं ने मध्यकालीन समाज के स्वाभिमानपूर्ण वैचारिक पक्ष के साथ सांस्कृतिक पक्ष को भी उजागर किया है। ऐतिहासिक विभुतियों का चरित्र चित्रण कवि का मुख्य उदेश्य रहा था। विपरीत परिस्थितियों में योद्धाओं को सम्बल प्रदान करना तथा वीरगति प्राप्त करने के उपरान्त उनके सुकृत्यों को अपनी लेखनी से अमर कर देना इनकी स्वाभिमानी विचारधारा को प्रगट करता है। मरुभौम के वीर योद्धाओं से सम्बन्धित पीथल की अनेक रचानाएं आज भी साहित्य संसार में उज्जवल पृष्ठों को आलोकित कर रही है, यथा-गीत पाहू भीमा रो, गीत गोपालदास मांडणोत रो, गीत जसै चारण रो, गीत मंडलै दूदै संसार चंदोत रो, गीत राठौड़ सेखा सुजावत रो, गीत रायसिंघ रो, गीत रामसिंघ कल्याणमलोत रो, गीत मेघा मोहिला रो, गीत मोटै मोहिल रो, गीत वैरसल प्रीथीराजोत नूं, गीत राम मानमलोत रो, गीत खंगार जैमलोत नूं, गीत कछावै अचलदास बलभद्रसोत नूं, गीत फहीम पूंजावत रो, गीत मांडणोत सारंगदे रो, गीत दलपत रायसिघोत नूं, गीत मंडलै अचलदासोत नूं, गीत दलपत रायसिंघोत नूं, गीत जगमाल उदैसिंघोत सिसौदियै रो, गीत पुंवार सादूल मालावत नूंगीत जाधै सोलंकी रो, गीत उदै मेहावत नूं, गीत रतनसी रो, गीत रायसिंघ देवड़े रो प्रिथीराज कहै आदि रचनाएं गीत छंद में लिख वीर योद्धाओं को प्रोत्साहित किया या उनके वीरगति प्राप्त करने के उपरान्त उनके राष्ट्रप्रेमी सुकृत्यों को स्वाभिमानी प्रेरणादायी पीथल ने प्रचारित प्रसारित किया।

स्वाभिमानी वीर योद्धा एवं वेलि क्रिसनरुकमणी के रचियता भक्तशिरोमणी महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ 'पीथल' की मृत्यु पूर्व घोषित समय पर वि.सं. 1657 में मथुरा के विश्रांत घाट पर हुयी। तत्कालीन भारत क्षेत्र के अनेक कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं द्वारा इनको श्रद्धांजलि अर्पित की तथा मरुप्रदेश के सभी राजपरिवारों ने शोक व्यक्त किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी पीथल के सम्बन्ध में

(शेष पृष्ठ 25 पर)

सदाचार और पुरुषार्थ

– श्री रामनन्दन प्रसाद सिंह

मानव जगत में पुरुषार्थ ऐसा प्रकाश स्तम्भ है, जिससे मानव जीवन की शक्ति, साहस और संकल्प जगमगा जाते हैं। सदाचार की गंगोतरी से संयम की वह गंगा प्रस्रवित होती है, जो आगे चलकर शक्ति की यमुना और उन्नति की सरस्वती से मिलकर जीवन की त्रिवेणी के रूप में परिणत हो जाती है और वह वहाँ से कृतार्थता रूपी मार्ग को प्रशस्त करती हुई सफलता सागर में मिल जाती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो कर्मवीर अपने कर्मपथ पर सदाचार, पुरुषार्थ और दृढ संकल्प के साथ आगे बढ़ता है, उसके मार्ग से विपत्तियाँ हट जाती हैं, संकट की ऊँची घाटियाँ पराजित सिद्ध होती हैं और जगत में उसे सर्वोच्च यश तथा सम्मान प्राप्त होता है। इसीलिए तो सदाचार उपादेय है।

अपने जीवन में सफलता की ऊँची चोटी पर पहुँच कर जो विजय का ध्वज फहराना चाहते हैं, उनके लिए पुरुषार्य दिव्य प्रकाश स्तम्भ और सदाचार सच्चे जीवन-सम्बल का कार्य करता है। विद्वान लेखक का कथन है- 'सदाचार का उद्देश्य संयम है, संयम में शक्ति है और शक्ति ही उत्थान की आधारशिला है।' एक पाश्चात्य दार्शनिक का कथन है कि सबसे शक्तिशाली व्यक्ति वह है, जो संयमी और सदाचारी है। संयम से ही शारीरिक बल, मनोबल और आत्मबल दृढ होते हैं। अन्तर्द्वन्द्व मिटता है और चित्त की एकाग्रता बढ़ती है। पुरुषार्थ पर विश्वास ही मानव को श्रेष्ठ कार्यो के लिए प्रेरित करता है। सामाजिक उत्तरदायित्व, साहस, दृढ संकल्प और उच्च विचार मानव जीवन में आशा की किरणें उतार लाते हैं। पुरुषार्थी और सदाचारी मनुष्य विभूषित व्यक्तित्व का प्रेरणा केन्द्र होता है। वह अमर ज्योति का आधार कहा जाता है। इसके विपरीत भाग्यवादी मानव पुरुषार्थ का शत्रु और अपने ही अदम्य साहस का लुटेरा है। जो पुरुषार्थी और सदाचारी होता है, वह कभी थकता नहीं, बाधाओं से जुझकर आगे निकल जाता है। सच्चे पुरुषार्थी अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति के लिए भागीरथ प्रयास करते हैं, क्योंकि लश्य की स्थिरता मानव की सफलता की सीढी है। पुरुषार्थी सदाचार के सहारे उस पर ऊपर तक चढ जाता है।

विख्यात वक्ता डिमास्थनीज का नाम सब जानते हैं। प्रकृति ने उसके लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में रुकावटें डाली थीं। वह बाल्यावस्था में तुतलाता था और उसके साथी उसकी बातों पर हंसते थे। उस समय कौन बता सकता था कि मुख में कंकड़ियां भरकर बोलने वाला यह बालक विश्व का प्रख्यात वक्ता होकर रहेगा। वस्तुतः उस सदाचारी बालक के जीवन में पुरुषार्थ का दिव्य आलोक प्रस्फुटित हो गया था, जो विवेक सम्मत मार्ग (सन्मार्ग) पर बढ़ने के लिए उसे प्रेरित करता रहा। इसी तरह संकल्प का धनी और निर्धारित लक्ष्य की सिद्धि के लिए व्यग्र गैलीलियो गणित का महान पुजारी था। पुरुषार्थी गैलीलियो गणित के अध्ययन में दिन रात संलग्न रहा और 18 वर्ष की उम्र में ही उसने पेंडुलम सिद्धान्त का आविष्कार कर लिया। आगे चलकर दूरवीक्षण यंत्र की रचना कर वह विज्ञान जगत में अमरत्व का भागी बना। यदि वह सदाचारपूर्ण पुरुषार्थ के सहारे बढकर निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लगन और निष्ठा को नहीं अपनाता तो विश्व का प्रसिद्ध वैज्ञानिक नहीं बन पाता।

लक्ष्य की स्थिरता के साथ-साथ आत्मविश्वास और साहस भी पुरुषार्थ के अभिन्न अंग हैं। आत्मविश्वासी कभी पराजित नहीं होता। इसी आत्मविश्वास ने महाराणा प्रताप को अकबर से जूझने की प्रेरणा दी और वीर शिवाजी को मुगल सम्राट औरंगजेब से मोर्चा लेने का साहस दिया और ने हसन को महान् सेनापति बनाया। इसी ने नेपोलियन को आल्प्स लांघने का उत्साह प्रदान किया

था और वीर पोरस को सिकन्दर से लड़ने की प्रेरणा दी थी। यही आत्मविश्वास पुरुषार्थियों का तेज, दुर्बलों का प्रकाश दीप, जननायकों का ओज और अनाथों का जीवन सर्वस्व है। आत्मविश्वास सदाचारी का एक लक्षण है।

इस क्रम में यह कहना समुचित होगा कि साहस में जो शक्ति निहित रहती है, वह बड़ी-बड़ी विपत्तियों को चकनाचूर करने में सहज समर्थ होती है। साहसी पुरुषार्थी चूड़ावत ने अपनी छोटी-सी सेना के सहारे औरंगजेब की विशाल सेना के दाँत खट्टे किये थे। साहसी वीर दुर्गादास ने अपनी सीमित शक्ति के बल पर राजपूती शान की रक्षा की थी। वीर शिवाजी का साहस सम्पूर्ण भारत पर छा गया था और नेपोलियन के साहस का ही प्रताप था कि देखते ही देखते अपराजेय आल्प्स उसके पाँवों के नीचे आ गया था। इतिहास में ऐसे अनेक योद्धा मिलते हैं, जिनके साथियों ने उन्हें जीवन संग्राम में विफल और पराजित समझ लिया था, किन्तु आत्मविश्वास और साहस के बल पर वे सफलता की चोटी तक जा पहुँचे। साहस में निहित अमोघ शक्ति सदाचार की देन होती है। वस्तुतः पुरुषार्थ और आत्मविश्वास उसका एक घटक तत्त्व है।

पुरुषार्थी के जीवन में एकाग्रता की महत्ता भुलायी नहीं जा सकती। वह तो मानव के अभ्युत्थान की अभिन्न सहचरी है। अपनी सफलता का मूल रहस्य बताते हुए चार्ल्स किंग्सले ने कहा था-'किसी कार्य को करते समय उस कार्य के अतिरिक्त संसार की कोई अन्य बात मेरे सामने नहीं आती।' वीरवर अर्जुन की सफलता के मूल में भी यही एकाग्रता थी, जिसका अन्य बन्धुओं में अभाव था। एकलव्य और बर्बरीक की वीरता और निपुणता का रहस्य एकाग्रता में निहित था। विश्व की सभी आधुनिक महान् विभूतियों की सफलता की आधारशिला थी यही एकाग्रता, जिसके अभाव में व्यक्ति की प्रतिभा असमय में ही मुरझाकर नष्ट हो जाती है। एकाग्रता इन्द्रिय निग्रह का सुफल होती है जो सदाचार का आधार बनती है।

सच्चे पुरुषार्थी अध्यवसाय को अपने जीवन का मूल मंत्र मानते हैं। भर्तृहरि ने कहा है-'हम तो कर्म को ही नमस्कार करते हैं, जिस पर विधाता का भी वश नहीं चलता।' महान् लेखक रस्किन की यह वाणी भी दृष्टव्य है- 'यदि तुम्हें ज्ञान की पिपासा है तो परिश्रम करो। यदि तुम्हें भोजन की आकांक्षा है तो परिश्रम करो और यदि तुम आनन्द के अभिलाषी हो तो परिश्रम करो। पुरुषार्थ ही प्रकृति का नियम है।' विवेकानन्द की यह दिव्य वाणी आज भी भारतीय जनमानस में गूंज रही है- 'शरीर तो एक दिन जाने को ही है तो फिर आलसियों की तरह क्यों जाय?' वस्तुतः पुरुषार्थ और सदाचार के मणि-कांचन संयोग से मानव जीवन सरल और सुरभित होता है। इसमें सूर्य का प्रताप और चन्द्रमा की स्निग्ध ज्योत्स्ना का संगम होता है। ऐसे ही जीवन से समाज और राष्ट्र का कल्याण होता है। व्यावहारिक सदाचारी का जीवन ऐसा ही होना चाहिए। ●

पृष्ठ 23 का शेष मुगल साम्राज्य के चर्मोत्कर्ष...

विदेशी इतिहासकारों ने भी उनके सुकृत्यों की प्रसंशा की है। डॉ. एलपी. तेस्सितौरी ने पृथ्वीराज के लिए लिखा है, 'पृथ्वीराज पराक्रम और अदम्य स्वाभिमान के अभिशंसक थे तथा दैन्य, गुलामी और नैतिक पतन के कट्टर शत्रु थे। जिस स्वाभावोचित उदारता के साथ वे किसी मित्र अथवा शत्रु की अपने काव्य में उसकी प्रसंशा कर सकते थे, उसी स्पष्टता के साथ वे अपने भाई बीकानेर नरेश की ही नहीं स्वयं बादशाह अकबर तक की भी उनके किसी हीन कार्य के लिए कटु आलोचना कर सकते थे।'

कर्नल डॉड ने लिखा है, पश्चिम के ट्रबेदार राजाओं की भाँति पृथ्वीराज अपने समय के नरेशों में से श्रेष्ठतम वीर थे, जो अपनी ओजस्वी काव्यशक्ति द्वारा लोगों में प्राण फूंक सकते थे तो समय पड़ने पर रणभूमि में अपने शौर्य का परिचय भी दे सकते थे। अधिक कहना व्यर्थ है पर तत्कालीन चारण कवियों के समुदाय में वे राठौर वीर सर्वोच्च अभिशंसा के भागी रहे हैं।

मरना यहाँ की शान है

– युधिष्ठिर

हमें अक्सर पराजित योद्धा कहा जाता है। आप कौनसी लड़ाई जीते। कहने वाला सोचता है मैं सब कुछ जानता हूँ इसके आगे क्या होगा। सब कुछ छुपा दिया गया, दबा दिया गया जैसे कुछ हुआ ही नहीं। सिर्फ प्रचार करो। इनका चरित्र हनन करो और उसके चरित्र को श्रेष्ठ बताओ जो लुटेरा था। चोरी करने के लिए चोरी करने के तरीके ढूंढने पड़ते हैं। देश को लूटने के लिए लुटेरों का महिमामण्डन करना पड़ता है। उसके चरित्र को स्कूलों में पढाया जाता है। जो यहाँ पैदा हुए उनके बारे में नहीं पढ़ाना है। मेरे कार्य को आमजनों की सहमति मिले इसलिए मैं उसी का प्रचार करूँ।

जो छाती पर पाँव रखकर सिर को धड़ से अलग कर देते हैं वो होते हैं राजपूत। जिनकी आँखों में खून बरसता है वो होते हैं राजपूत। जो भय को भयभीत कर दें वो होते हैं राजपूत। जो मौत का मजाक बना दें वो होते हैं राजपूत।

मुट्ठी भर लोगों ने जिन्हें लोहे के चने चबा दिए। शत्रु की विजय के सामने दीवार बनकर खड़े हो गए। जहाँ जीवन से बड़ा स्वाभिमान हो उसे कौन पराजित कर सकता है। यह स्वाभिमानी कौम है, अपनी मान-मर्यादा के लिए त्याग करते एक बार भी नहीं सोचेगी क्योंकि मरना यहाँ की शान है। जिनकी मेहमान नवाजी का कोई सानी नहीं। जो सुख-दुख में साथ रहते हैं वो मरते वक्त कैसे अलग हो सकते हैं।

उस समय हंजतल एक विख्यात जागीर थी। रूपसिंह के देहावसान के बाद उनके पुत्र सूरजमल और नाहरसिंह बड़े वीर व बहादुर हुए। हंजतल का पूरा इलाका सूरजमल व नाहरसिंह का लोहा मानता था। उनको बिना पूछे कोई भी निर्णय नहीं होता था।

लेकिन आग तो कहीं और लगी हुई थी। अपने भीतर जलने वाली आग को कोई बाहर देखना चाहता था। भावलपुर के पठान उनसे जलने लगे थे और हंजतल को फतह करने की सोचने लगे थे। सूरजमल व नाहरसिंह को भी पठानों की क्रूरता व अत्याचारी प्रवृत्तियों की भनक थी। इसलिए सूरजमल, नाहरसिंह व लूंगीया वजीर अपने घोड़ों पर सवार होकर सुदूर रेत के टीलों पर जाकर निशाना साधने का प्रयास करते थे। सूरजमल की पत्नी ऋधु भटियाणी नाम से प्रसिद्ध थी। वह शीशे की गोलियाँ बनाया करती थी। लूंगिया वजीर घर जाकर अपनी पत्नी के ललाट के ऊपर कोडी रखकर के निशाना साधता था। लोग हंसते थे, इस बेचारी को जरूर मार देगा। पर सूरजमल और नाहरसिंह उसके इस कार्य से बहुत खुश थे।

उधर पठान गुप्त रूप से हंजतल की ताकत का पता लगाने का प्रयास करने लगे। उन्होंने एक पठान को गुप्तचर बनाकर भेजा कि हंजतल का पता लगाकर आओ। कहाँ से कितनी सेना के साथ आक्रमण करना पड़ेगा। परसों ही हम हंजतल पर आक्रमण करेंगे। किसी को कानों-कान खबर नहीं लगनी चाहिए। पता लगाने के लिए पठान हंजतल ग्राम पहुँचा। गाँव के मुखिया सूरजमल की कोटड़ी का पता करके, प्रातःकाल कोटड़ी पहुँचा। सूरजमल ने अतिथि का सेवा सत्कार किया। रोटी पर मक्खन डालकर नाश्ता करवाया। फिर खाना खिलाया। पठान उनकी अतिथि सेवा देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उसे लगा ये भले आदमी हैं इन्हें मरवाना बेबुनियाद है। उसका दिल पिघल गया। उसने फौज आने की सूचना दे दी।

''परसों पंजनी काबल साही की फौज आ रही है। आप अपना इंतजाम कर लें, अन्यथा पूरी हंजतल की तबाही हो जाएगी।''

यह कहकर पठान चला गया। यह खबर हंजतल में आग की तरह फैल गई। यह चर्चा हर गली मौहल्ले में हर जगह होने लगी, पंजनी काबूलसाही हंजतल पर चढ़ाई करने परसों ही आ रहा है। इतने लोग भी नहीं थे। हंजतल छोटी-सी जागीर थी। पठानों की बहुत बड़ी फौज से मुकाबला करना था। सब गाँव के लोग एक छोटे से देवी के मंदिर में इकट्ठे हुए। आखिर में यह फैसला लिया गया, हम भागेंगे नहीं, न ही समर्पण करेंगे। रात को हंजतल गाँव में किसी के यहाँ भोजन नहीं बना। पूरी रात लोगों ने नींद नहीं ली। महिलाओं को गाँव के उत्तर में फांटा डरड के नाम से एक सुरक्षित स्थान था, वहाँ पर तलवार धारियों की सुरक्षा में रखा गया। पूरी रात मरणगीत गाये गये। ऋधु भटियाणी ने सबको एक-एक कटार दे रखी थी, अगर दुश्मन की विजय होती है तो रजपूती आन-बान के लिए अपने आपको मिटा देना।

दूसरे दिन पठानों की सेना आ पहुँची। राजपूतों ने फांटा डरड के सामने वाले टीबे पर मोर्चा ले रखा था। पठानों को घमंड था कि हमारे पास इतनी भारी सेना है, ये मुट्ठी भर राजपूत क्या कर लेंगे।

नाहरसिंह को पता चला कि छाछरों पर आक्रमण करने वाला मदद खाँ भी साथ में है। नाहरसिंह की भुजाएँ फड़क उठी। आँखें क्रोध से लाल हो गई। रक्त की ऊष्णता बढ गई। रोंगटे खड़े हो गये। रक्त से प्यास बुझाने का अवसर आ गया था। बदले की अग्नि भड़क उठी।

पंजनी काबल साही घोड़े पर चढ़कर इस लड़ाई को निहार रहा था। उसकी नजरें सूरजमल व नाहरसिंह को तलाश रही थी। मदद खाँ नाहरसिंह के सामने आ गया। नाहरसिंह ने शेर की दहाड़ के साथ मदद खाँ की छाती पर पाँव रखकर, सिर धड़ से अलग कर दिया। राजपूतों के खेमे में खुशी की लहर दौड़ गई। ऋधु भटियाणी शीशे की गोलियाँ बनाने में व्यस्त थी। इतने में नाहरसिंह के जाड़ी में गोली लगी। नाहरसिंह ने अपनी बोकानी से जाड़ी को बांध दिया। नाहरसिंह की पत्नी को जब गोली लगने का पता चला तो उन्होंने कटार से अपने आपको समाप्त कर दिया।

लूंगिया वजीर ने पत्नी के ललाट पर निशाना साधने के दिन को याद करते हुए पंजनी काबल साही पर निशाना साधा। निशाना सीधा ललाट पर लगा। पंजनी काबल साही ढेर हो गया। पठानों के हौसले पस्त हो गये। राजपूत दूने वेग से पठानों पर टूट पड़े। पठान सेना के पैर उखड़ गये। राजपूतों ने भागती हुई सेना का पीछा करते हुए थोरी टोभा के पास मर्दाना वेश में पाँच मुस्लिम लड़कियों को पकड़ लिया। राजपूतों की इस लड़ाई में शानदार विजय हुई। इस युद्ध में जो मुस्लिम लड़कियाँ पकड़ी थी उनमें से तीन की शादी वहीं कर दी और दो ने वापिस जाने की इच्छा जाहिर की तब उन्हें छोड़ दिया।

यह अविजित कौम है क्योंकि यह ईश्वरीय मार्ग पर चलने वाली है।

●

वीर पुरुष के गले में अभिलाषाओं की जंजीर नहीं होती। उसे इसकी चिन्ता नहीं होती कि उसके पीछे कौन हँसेगा और कौन रोएगा। उसे इस बात का भय नहीं होता कि उसके बाद काम कौन संभालेगा। यह सब संसार से चिपटने वालों के बहाने होते हैं। वीर पुरुष जब तक जीते हैं निर्द्वन्द्व जीते हैं।

– मुंशी प्रेमचन्द

बेटी से बहू की यात्रा

– रश्मि रामदेरिया

महाभारत में आता है कि बेटे भाग्य से पैदा होते हैं तो बेटियाँ सौभाग्य से पैदा होती हैं। पुण्य करने से बेटी घर में जन्म लेती है। वह तो अपनी सारी क्षमताएँ दूसरों के लिए ही न्योछावर करती रहती है। अतः तीनों लोकों में एक बेटी ही ऐसी होती है जिसका भार हर कोई सहन नहीं कर सकता। श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जिस दिन बेटियों का जन्म लेना रुक जाएगा, उस दिन यह सृष्टि भी ठहर जाएगी और सृष्टि का अन्त हो जाएगा।

जिस घर-आंगन में पिताश्री (कंवर सा, आप सा) की परी का जन्म होता है वह घर सौभाग्य से भर जाता है। बेटा जो एक कुल को रोशन करता है जबकि बेटियाँ दो कुल को रोशन करती हैं। माता-पिता के घर एक बेटी, बहन, ननद, भतीजी, जेठूती आदि के दायित्व निभाती है। वहीं ससुराल में बहू भाभीसा, दिवरानी, जेठानी, सास आदि के रूप में सारा कार्यभार संभालती है। शास्त्रों के अनुसार तो बेटियाँ भी माता-पिता का पिंडदान कर सकती हैं। माता-पिता को तो उसे अहसास कराना चाहिए कि वह उनके लिये कितनी महत्त्वपूर्ण है। वे परिवार पर बोझ नहीं होती बल्कि अपने परिवार की किस्मत बनाने के लिए पैदा होती हैं।

बेटियाँ ही माँ सरस्वती, माँ दुर्गा, माँ लक्ष्मी या शक्ति रूप माँ काली का रूप होती हैं। प्राचीन काल से ही बेटी किसी बेटे से कम नहीं थी। ऋषि वशिष्ठ की पत्नी अरुंधति ने भगवान इन्द्र और अरुण को धर्म का ज्ञान दिया था। द्रोपदी एक ज्ञानी अर्थशास्त्री थी और युधिष्ठिर के राज काज को संभालती थी।

द्रोपदी के अपमान से कौरवों का नाश हो गया था और सीता माता के अपमान में पूरी लंका जला दी गई। रामायण में राजा दशरथ राजा जनक से कहते हैं-'बड़े तो आप हैं क्योंकि आप एक दाता हैं और मैं याचक।' अतः लड़की के पिता को गर्व करना चाहिए क्योंकि वह एक दाता है। प्रभु हमेशा उसको बेटी देते हैं जो उसको पालने में सक्षम होता है। एक बार स्वामी विवेकानन्द वैष्णो देवी की सीढियाँ चढ रहे थे। उनके बगल में एक वृद्ध व्यक्ति अपनी बेटी को कन्धे पर उठाकर सीढियाँ चढ़ रहा था। उन्होंने वृद्ध व्यक्ति से कहा- आप बिटिया के बोझ से थक रहे होंगे, मुझे दे दीजिए। वृद्ध व्यक्ति ने कहा- बेटी बाप पर कभी बोझ नहीं होती, जब बेटी बाप के कंधों पर होती है तो वह पिता के अन्य बोझों को कम कर देती है। सच है कि बेटियाँ कभी धन की भूखी नहीं होती, वे सिर्फ मान और सम्मान की भूखी होती हैं।

जो स्वर्ग को ही घर ले आए, वह होती हैं बेटियां।
जो घर को ही स्वर्ग बना दे वह होती हैं बहुएं।।

अतः हमारी कुल की गौरवशाली, भाग्यशाली बेटियों को अपनी कीमत बताएँ। वे संतुष्ट, सुरक्षित और दयालु बनी रहें। सतर्क रहकर, सोच-समझकर हर कार्य को करें। आत्मचिन्तन से अपने अस्तित्व को पहचाने। अपने आपको पहचाने। आप कोई साधारण बालिका नहीं हैं, एक क्षत्राणी हैं। अपनी बुद्धि और विवेक का सही सदुपयोग करें। आत्मविश्वास, धैर्य, निर्णय लेने में सक्षम, वाणी में मधुरता, शान्त स्वभाव आदि गुणों को धारण करना है। कठिन विकल्पों का सामना करने पर भी अपने दृढ विश्वास पर दृढ बने रहने का साहस बनाए रखें। तनाव मुक्त रहने का प्रयास करें। कोई भी नकारात्मक बात न करें। फिजूल खर्ची से बचें। घर में स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें।

नव विवाहित बेटी को सबसे बड़ी सीख कि-सभी को अपनी तरफ से जितना हो सके सम्मान दें, अपना-पन दें, अपनी शिक्षा का सदुपयोग करें, वाणी पर नियंत्रण रखकर हर कार्य को कुशलतापूर्वक करें, आलस्य का त्याग करके सेवा करें। सेवा का मौका मिलने को अपना सौभाग्य मानें और मन लगाकर अपने उत्तरदायित्वों को पूरा

करें। लेने की नहीं देने की इच्छा रखें, प्रेम, स्नेह, सेवा आदि देने की स्वयं शुरुआत करें। मोबाइल पर कम से कम बातें करें, अपने समय का सदुपयोग करें। अपने संस्कारों को जीवन में दृढता से उतारें, ये संस्कार ही आदर्श जीवन के लिए मार्गदर्शन करेंगे। ससुराल की बातें वहीं रखें और पीहर की बातें वहीं रखकर आएँ। अपना वैवाहिक पारिवारिक जीवन पूरी समझ के साथ सामञ्जस्य स्थापित करते हुए जीना चाहिए। बेटियों की जितनी अच्छी परवरिश घर में होगी, वही निखर कर जीवन में सामने आएगी। क्रोध, ईर्ष्या, जलन, द्वेष, आलस्य आदि इन सभी अवगुणों से अपने को बचाकर रखें। बेटी की परवरिश करते समय-समय पर उसे जिम्मेदारियाँ देते रहें। हर कार्य में कुशल, पढाई के साथ सर्वगुण सम्पन्न, अपने पैरों पर खड़ी होने में सक्षम और घर तथा बाहर सब अच्छे से व्यवस्थित करना आना चाहिए। बेटियों को यह सब सिखाएँ यही बेहतर है। बेटियों के लिए ये गुण सीखना नामुमकीन नहीं है। अगर वे ठान लें कुछ करने की, दृढ संकल्पित हो जाएँ तो वे कुछ भी कर सकती हैं।

जो पनपो तो कली! हमारी लाख दुआएं ले लेना,
युग-युग की ओ जगमग आशा, तन मन की बाती लेना।
देवशीश पर चढने लायक तेरा नूर है,
कहो कली क्या तुम्हें चटकना डाली पर मंजूर है।

सम्बन्धों में स्पष्ट व स्वच्छ साझेदारी होनी चाहिए। पति-पत्नी दोनों एक दूसरे के परिवार का सम्मान करें। बेटी के व्यक्तित्व और उसके सद्विचारों को पुष्ट करें, जिससे उसका भविष्य सुनहरा बन सके। संस्कारित शिक्षा का ज्ञान उसके जीवन को संवारता है। अपने स्वयं के आराम व फायदे से बाहर आना होगा ताकि अपने सम्बन्धों में खटास न आने लगे। एक दूसरे के अधिकार छीनने के बजाय अपने अधिकार साझा करें। फिर चाहे सास-बहू हो, जेठानी-देवरानी हो, हर रिश्ते के बीच टकराव नहीं के बराबर होगा और सम्बन्ध मजबूत बनेगा।

सबकी पसन्द का रखें विशेष ख्याल, सभी के विचारों को महत्त्व दें। सास अपनी बहू की तारीफ करे और बहू धैर्य पूर्वक, शांति के साथ सास की सेवा करे, यह अति आवश्यक है। हर रिश्ते की शुरुआत मित्रता से करें, एक दूसरे की सलाह का सम्मान करें, रीति-रिवाजों को भली प्रकार निभाएं। कैसी भी समस्या बन रही हो, बातचीत से सुलझाएं। समय और जगह के अनुकूल पहनावे का चयन करें। घर के वातावरण को खुशनुमा बनाए रखें। विपरीत परिस्थिति पैदा हो जाए तो कोई गलत कदम न उठाएँ, शान्त रहकर, आशावादी बनी रहें, संवेदनशीलता के साथ स्थिति को समझें, जल्दबाजी से बचें, विनम्र बने रहें, भागीदारी दिखाएं, बड़ों से सलाह लें, वातावरण बदलने के लिए सब मिलकर बाहर जाएं तो विपरीत परिस्थिति को भी अनुकूलता में बदल सकते हैं। ऐसे ही संस्कार अपने बच्चों को देकर उनका भविष्य भी निखारें। जय संघशक्ति! ●

दूसरों को हम पर हंसने का मौका तब आता है जब हम अपनी आँखों में हलके हो जाएँ। सुधारक और अग्रगामी संसार में मूर्खों द्वारा सदा लांछित हुए हैं, पर वे अपनी आँखों में हलके नहीं हुए। इसलिए यह लांछना उन्हें लांछित नहीं कर पाई और एक दिन अपने प्रति उनका यह सम्मान दूसरों के मस्तकों को अपने चरणों में झुका सका है।

– कन्हैयालाल मिश्र

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

किला रायपुर (पंजाब)

(रूरल ओलम्पिक्स जिसकी पहचान है)

पंजाब के लुधियाना जिले के गाँव किला रायपुर में हर वर्ष एक ऐसा आयोजन होता है जो केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। किला रायपुर ग्रामीण ओलम्पिक्स को इतनी प्रसिद्धि मिल चुकी है कि इसे रेल, सड़क और हवाई मार्ग से जोड़ना भी आवश्यक हो गया है।

इस ग्रामीण ओलम्पिक खेलकूद त्यौंहार को पिछले सत्तर वर्षो से बडे हर्षोल्लास के साथ स्थानीय लोग मनाते हैं। इसका रोमांच इतना अधिक बढ़ चुका है कि, दुनिया के सभी देशों के पर्यटक इसकी शोभा बढाने यहाँ एकत्र होते हैं।

किला रायपुर ग्रामीण ओलम्पिक का आयोजन हर वर्ष फरवरी माह में होता है जिसकी अवधि तीन दिन की होती है। आयोजन की तारीखों की सूचना बहुत पहले ही प्रसारित कर दी जाती है। इस ओलम्पिक में चार हजार से अधिक प्रतिभागी भाग लेते हैं। खेल के मैदान में महिलाएँ और पुरुष दोनों अपना भाग्य आजमाते हैं। त्यौहारी मौसम में इसका अयोजन होते हुए भी इसका आनंद लेने के लिए लाखों की संख्या में ग्रामीण दर्शक यहाँ आते हैं और शायद इसीलिए यह ग्रामीण ओलम्पिक कहलाता है।

यहाँ पर मुख्य रूप से तीन प्रकार के खेलों की स्पर्द्धाएँ आयोजित की जाती हैं :-

1. ग्रामीण खेल-कबड्डी, कुश्ती और भारोत्तोलन स्पर्द्धा।
2. आधुनिक खेल-अथेलेटिक्स, हॉकी, फुटबाल, वॉलीबाल, साइक्लिंग और हैण्डबाल ।
3. परफोर्मिंग स्पोर्ट्स-एक्रोबैटिक्स, ट्रेक्टर को सीने के ऊपर से गुजारना और सीने पर चट्टान को तोड़ना इत्यादि।

बैल, ऊँट, कुत्ते, खच्चर और अन्य जानवरों के साथ-साथ लोगों के हैरतअंगेज करतब देखकर लोग आश्चर्य चकित हो दांतों तले अंगुलियाँ दबा लेते हैं।

एड्रेनालाइन-पम्पिंग बैल गाडी रेस इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहती है। इस स्पर्द्धा को जीतने वाले को दो लाख रुपये पुरुस्कार स्वरूप दिये जाते हैं। 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने बुल रेसिंग पर बैन लगा दिया था।

दर्शकों के मनोरंजन के लिए यहाँ कुत्ता दौड़, ऊँट दौड़, घुड़ दौड़ और नृत्य के अलावा युद्ध कौशल का भी प्रदर्शन किया जाता है। इस समारोह का सबसे अधिक चौकाने वाला पार्ट होता है परफोर्मिंग स्पोर्ट्स और स्टण्ट्स जिनकी यहाँ कोई सीमा नहीं होती. जितना आप सोच सकते हैं उससे अधिक करतब देखने को मिलेंगे। ग्रामीण ओलम्पिक वास्तव में धीरज, कौशल, शक्ति और साहस के प्रदर्शन का एक अद्वितीय नमूना है।

दिन भर के मुकाबलों की समाप्ति पर और रात्रि के पहले पहर से शुरू होते हैं सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसमें लोकगीत, भंगड़ा और गिद्धा की छटा देखते ही बनती है। ग्रामीण ओलम्पिक की पंजाब के गाँवों के विकास में अहम भूमिका रही है। इससे प्रेरित होकर पंजाब के 7000 गाँवों में खेलों के आयोजन प्रारम्भ हो गये हैं।

यह एक ऐसी अनूठी स्वस्थ्य परम्परा है जिसका स्वच्छता अभियान के साथ चोली दामन का रिश्ता तो है ही साथ ही यह खेल प्रतिभाओं को तराशने और तलाशने का एक अवसर प्रदान करती है। जालंधर के अकेले गाँव संसापुर ने भारतीय हॉकी टीम को 12 आला दर्जे के खिलाडी प्रदान कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। इसका श्रेय इस प्रकार के आयोजनों को ही दिया जाना चाहिए। खेलों में पंजाब का योगदान सदैव ही प्रशंसनीय रहा है।

खोनोमा (नागालैण्ड)

पर्यावरण संरक्षण

नागालैण्ड की राजधानी कोहिमा से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है खोनोमा जो एशिया का सबसे अधिक हरा-भरा गाँव माना जाता है। 700 वर्ष पुराने इस गाँव का क्षेत्रफल 123 स्क्वॉयर किलोमीटर है, यहाँ की जनसंख्या 3000 है जो 600 घरों में निवास करती है।

यहाँ के लोगों का खेती करने का तरीका बिल्कुल निराला है जो पुराने सीढ़ीदार खेतों से मेल खाता है। अब तक प्राप्त जानकारी के अनुसार यहाँ जंगली फलों की 84 किस्में, जंगली सब्जियों की 116, मशरूम की 9 और प्राकृतिक रंगों के पाँच प्रकार के लिए 70 से अधिक किस्मों सहित पौधों की 250 प्रजातियों को लिपिबद्ध किया गया है।

खोनोमा के निवासी अंगामी जन जाति के हैं जो अपने मार्शल कौशल और रणनीतिक कौशल के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने अनेक विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध लड़ाईयाँ लड़ उनको भारी क्षति पहुँचाई है।

यहाँ सन् 1890 में ईसाई धर्म का प्रचलन शुरू हुआ और वर्तमान में यहाँ इसाई धर्म के अनुयाईयों का बाहुल्य है।

खोनोमा में 100 से भी ज्यादा जातियों के जंगली जानवर, स्तनधारी जीव और पक्षी विचरण करते देखे जा सकते हैं। यहाँ के लोगों का व्यवसाय कृषि के साथ ही शिकार करना भी है।

यहाँ बांस की 19 से भी अधिक प्रकार की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। जो यहाँ के निवासियों की रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करती हैं। खोनोमा में घर एक दूसरे से सटे हुए छोटी पहाड़ियों की ढलानों पर बहुत ही सुन्दर तरीके से बनाये हुए हैं।

स्थानीय निवासियों ने यहाँ लगभग 205 प्रजाति के वृक्षों, 45 प्रजाति के आर्किड्स और 11 प्रकार के केन्स की किस्मों के होने का दावा किया है। गाँव के हर घर के दरवाजे पर एक खास तरह का सींग लटका हुआ पाया जाता है। जो उनके साहस और उससे उनकी होने वाली रक्षा के भाव को दर्शाता है। ये लोग अपने पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाते हैं और अपनी पारम्परिक वेशभूषा में बड़े चाव से सजते हैं।

मावल्यंनोग मेघालय

स्वच्छ गाँव

स्वच्छ सुन्दर सुगंधित मेघालय की शीतल वादियों की गोद में एक नवजात शिशु की तरह अट्टहास भरी किलकारियाँ मार शैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करता एक छोटा-सा गाँव है मावल्यंनोग। इसकी अलौकिक छटा से प्रभावित हो लोग इसे ईश्वरी वाटिका मानते हैं। यह गाँव मेघालय के शिलांग और भारत बांगलादेश सीमा से 90 किलोमीटर दूर है। यहाँ के लोग सुपारी की खेती से अपनी आजीविका चलाते हैं।

यहाँ के लोग सदैव सजे-धजे रहते हैं और साफ सफाई पर विशेष ध्यान देते हैं। स्वच्छता की दृष्टि से यह गाँव इतना अनुपम है कि 2003 में इस गाँव को एशिया का और 2005 में भारत वर्ष का सबसे अधिक साफ सुथरा गाँव होने का गौरव प्राप्त हुआ।

महात्मा गाँधी की 145वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर 2 अक्टूबर, 2014 को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जब राजपथ पर विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सभी देशवासियों से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने की अपील कर रहे थे तब अपने सम्बोधन में उन्होंने मावल्यंनोग की उपलब्धियों का जिक्र किया और इसका उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस गाँव की सबसे बड़ी खास बात यह है कि यहाँ की सारी सफाई ग्रामवासी स्वयं करते हैं। इस पूरे गाँव में जगह-जगह बाँस की लकड़ी के बने टोकरे (डस्ट बिन) रखे हैं। घरों से निकलने वाले कूड़े-कचरे को लोग इन

टोकरों में डाल देते हैं। फिर उस कचरे को एक जगह इकट्ठा कर खेती के लिए खाद तैयार कर लेते हैं।

स्वच्छ रहना उनकी आदत बन गई है किसी भी ग्रामवासी को जहाँ भी गन्दगी नजर आती है वह उसी समय सफाई पर लग जाते हैं। फिर चाहे समय सुबह का हो, दोपहर या शाम का हो। सफाई के प्रति जागरूकता का अंदाज आप इस बात से लगा सकते हैं कि यदि रास्ते पर चलते हुए किसी ग्रामवासी को कोई कचरा नजर आता है तो वह वहीं रुक कर कचरे को उठाकर नजदीक के डस्टबिन में डालता है और फिर आगे बढ़ता है। और यही आदत इस गाँव को शेष भारत से अलग करती है। जहाँ हम हर बात के लिए प्रशासन पर निर्भर रहते हैं, खुद कोई पहल नहीं करते हैं।

गाँव के अन्दर पक्की सड़कें हैं। जिनके किनारे पर सुन्दर फूलों के पौधे और हेज लगी हुई है जिनको बाँस से सपोर्ट देकर सुव्यवस्थित रखा जाता है। जगह-जगह चेतावनी भरे सांकेतिक बोर्ड लगाये हुए हैं। गन्दगी फैलाने पर आर्थिक दण्ड का भी प्रावधान है।

इस गाँव में प्लास्टिक पूर्णरूपेण प्रतिबंधित है। यह गाँव स्वच्छता के अलावा सौ प्रतिशत साक्षर है और सभी ग्रामवासी बड़ी सहजता से बोलचाल के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं।

इस गाँव के आसपास घूमने और देखने के लिए अनेक सुंदर स्पॉट हैं, जैसे वाटरफॉल, लिविंग रूट्स ब्रिज और बैलेन्सिंग रॉक्स। इसके अलावा एक और बहुत ही प्रसिद्ध आकर्षक स्थान है 80 फीट ऊँचा मचान जिस पर बैठकर शिलाँग की प्राकृतिक सुन्दरता का विहंगम दृश्य निहार सकते हैं। आप इस गाँव में घूमने का आनन्द आवश्य लें परन्तु ध्यान रखें कि आप द्वारा वहाँ की सुन्दरता और स्वच्छता को नुकसान नहीं पहुँचे।

इस गाँव को देखने के लिए सैलानियों का तांता लगा रहता है। औसतन 300 सैलानी हर दिन इस गाँव में आते हैं। सैलानियों के आगमन से इस गाँव और क्षेत्र को काफी आमदनी होती है।

मावल्यंनोग की उपलब्धियों की जानकारी और महिमा सुनकर असम के गाँव शिकदमखा के निवासियों ने भी संकल्प किया है, वे भी अपने गाँव को एशिया का सबसे सुन्दर और स्वच्छ गाँव बनाकर रहेंगे और वे सभी प्रयासरत हैं। आज भी वह गाँव दर्शनीय और मनमोहक भी है।

मत्तूर (शिमोगा, तमिलनाडु)
(संस्कृत भाषा का बसेरा)

संस्कृत हमारी शास्त्रीय भाषा है, जिसे देववाणी अथवा सुरभारती भी कहा जाता है यह विश्व की सबसे पुरानी भाषा है। संस्कृत आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी है। परन्तु इसे विडम्बना कहें या विवशता कि, समय की आंधी और पाश्चात्य सभ्यता के आच्छादन से हमारी शास्त्रीय भाषा लोक व्यवहार से ओझल हो गई है।

इस घोर अंधकार में भी प्रकाश की लौ प्रज्वलित करता, आशा की किरण को जगाता और इस नीतिवचन- 'रात है तो प्रभात दूर नहीं' को संबल प्रदान करता एक गाँव है मत्तूर जो तमिलनाडु प्रांत के शिमोगा जिले के अन्तर्गत आता है। यह गाँव अपनी प्राचीन जड़ों को अभी भी अपने में संजोये हुए है। संस्कृत भाषा का यहाँ पर बसेरा है और संस्कृत यहाँ की मातृ भाषा और औपचारिक भाषा है। इस गाँव में रोजमर्रा की जिंदगी में सिर्फ संस्कृत भाषा का ही उपयोग किया जाता है। यह केवल मत्तूर में ही नहीं अपितु इसकी जुड़वां बहन कहलाने वाली होसाहल्ली गाँव की भी परम्परा है। मत्तूर और होसाहल्ली गाँव में ब्राह्मण परम्पराओं को ही महत्त्व दिया जाता है जो वैदिक जिंदगी बिताते हैं।

लगभग 600 वर्ष पूर्व तमिलनाडु के पुदुक्कोट्टई गाँव के ब्राह्मणों के एक समूह ने इस गाँव में प्रवास किया। ब्राह्मणों का यह समूह और जिसे संकेती के नाम से जाना जाता हैं, अग्राहरम जीवन व्यतीत करता है।

वेदों की पढ़ाई करते छात्रों को अपनी प्राचीन भाषा को मातृ भाषा के रूप में उपयोग करते देख बहुत रोमांचक लगता है। यहाँ के सभी लोग शिक्षित हैं और हर घर में कम से कम एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर है और गाँव के बच्चे शिक्षा के हर क्षेत्र में टॉपर्स भी रहते हैं। यहाँ के बच्चों का मानना है कि वेदों के इन संस्कृत श्लोकों के जप से उनकी एकाग्रता और स्मरण शक्ति बढ़ती है।

मत्तूर में अग्राहरम जीने के तरीके को भी सीखा और जाना जा सकता है जो कई वर्षों पूर्व भारत के और स्थानों से समाप्त हो चुका है। यहाँ के लोगों के मुँह से से संकेती संस्कृत और कन्नड भाषा में बातें सुनना बड़ा मजेदार लगता है। माडर्न जमाने के साथ-साथ वैदिक जीवनयापन आपको अनायास ही मत्तूर और होसाहल्ली की ओर आकर्षित कर लेता है। होसाहल्ली जो तुंगभद्रा के दूसरे किनारे पर स्थित है. अपनी गमाका कला (गाने और कथा कहने की कला) के लिए प्रसिद्ध है।

पर्यटन की दृष्टि से मत्तूर (शिमोगा) एक खुबसूरत गाँव है, जहाँ तुंगभद्रा नदी के किनारे पर लगे सुपारी के पेड़ और नदी के दोनों तरफ का नजारा बहुत ही सुरभ्य और शांतिप्रद प्रतीत होता है। यहाँ की यात्रा आपको प्राचीन काल में ले जाएगी जहाँ आपको इस पुरानी भाषा की शक्ति का अनुभव होगा। मत्तूर के अलावा हमारे देश में निम्नलिखित गाँवों में भी संस्कृत बोली जाती है :-

- झीरी, जिला-राजगढ़ (मध्य प्रदेश)
- सासाना, जिला-गजपति (ओडिशा)
- बघुवार, जिला-नरसिंहपुरा (मध्य प्रदेश)
- गनोडा, जिला-बांसवाडा (राजस्थान)
- मोहद, जिला-बुरहानपुर (मध्य प्रदेश)

(क्रमशः)

फार्म-4 (नियम-8)

1.	प्रकाशन स्थान	:	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	राजेन्द्र सिंह राठौड़
	नागरिकता	:	भारतीय
	क्या विदेशी हैं	:	नहीं
	पता	:	बी-136, विनोबा भावे नगर, लक्ष्मी नारायण मंदिर के पास, वैशाली नगर, जयपुर-302012
4.	प्रकाशक का नाम	:	राजेन्द्र सिंह राठौड़
	नागरिकता	:	भारतीय
	क्या विदेशी हैं	:	नहीं
	पता	:	बी-136, विनोबा भावे नगर, लक्ष्मी नारायण मंदिर के पास, वैशाली नगर, जयपुर-302012
5.	सम्पादक का नाम	:	राजेन्द्र सिंह राठौड़
	नागरिकता	:	भारतीय
	क्या विदेशी हैं	:	नहीं
	पता	:	बी-136, विनोबा भावे नगर, लक्ष्मी नारायण मंदिर के पास, वैशाली नगर, जयपुर-302012
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	:	पूर्ण स्वामित्व-श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

07-06-2024 **राजेन्द्र सिंह राठौड़,** प्रकाशक

अपनी बात

क्रोध 6 बड़े दोषों में से एक है। क्रोध से मुक्ति पाना कोई आसान बात नहीं है। क्योंकि क्रोध हमारी जड़ों में छिपा है। क्रोध कोई ऊपर से आरोपित दोष नहीं है। यह ऐसा नहीं है कि वस्त्रों की तरह ऊपर से पहन लिया या उतार दिया। क्रोध ऐसा है जैसे हमारी चमड़ी छीली जाएगी, पीड़ा होगी, कष्ट होगा, खून बहेगा। और यदि हमने जन्म-जन्म क्रोध किया हो, जीवन भर यदि क्रोध किया है तो वह हमारी रग-रग में समा गया होगा।

इस क्रोध से छूटने का उपाय इस क्रोध का त्याग नहीं है। त्याग कैसे करेंगे? यह कोई भौतिक वस्तु थोड़े ही है कि जिसको छोड़ दें। यह तो हमारे स्वभाव में ही है। हम स्वयं ही क्रोध रूप हो गये हैं। यह हमारे रग-रेशे में व्याप्त हो गया है। हमें सजग होना पड़ेगा। क्रोध को हम हमारे जीवन-चिन्तन का आधार न बनायें। ध्यान में उतरें। ध्यान हमें सजग करेगा। ध्यान हमको वह क्षमता देगा कि क्रोध हमको दिखाई देने लग जाए। क्रोध-मूर्च्छा का ही अंग है और वह चलता इसीलिए रहता है कि हम मूर्च्छित हैं। हमें पता ही तब चलता है जब क्रोध आ भी चुका, जा भी चुका, उपद्रव हो भी चुका। पीट चुके किसी को, तोड़ डाली चीजें, हाथ में हथकड़ी डल गई, अदालत की तरफ चले, तब जाकर ख्याल आता है कि क्रोध फिर हो गया। जैसे-जैसे होश बढ़ेगा, तो हमें पहले ही ख्याल आ जाएगा, इतना बाद में नहीं। जब क्रोध मौजूद होगा तो हमारी मुट्ठियाँ भिंच रही होगी, दांत क्रोध से भर रहे होंगे और जबड़े क्रोध से उन्मत्त हो रहे होंगे, तब याद आएगा कि क्रोध है, यह आ रहा है, हो रहा है। फिर होश की और गहराई बढेगी तो पहले ही ख्याल आ जाएगा कि क्रोध आने वाला है, आकाश में बादल घिरे हैं, अभी बरसे नहीं और हम समझ लेंगे कि क्रोध आने वाला है।

जब ध्यान इतना गहरा हो जाएगा कि क्रोध के आने से पहले हमें दिखाई पड़ जाएगा कि आता है तो हम मुक्त हो पाएंगे, इससे पहले मुक्त नहीं हो सकेंगे। इससे पहले हम चाहे कसमें खाएं, व्रत करें, नियम पकड़ें, किसी से आशीर्वाद मांगे तो भी ये सब काम नहीं आएंगे। ये सब तो बहाने हैं पर हम जैसे हैं वैसे ही रहेंगे।

क्रोध को त्यागा नहीं जाता। क्रोध को जाना जाए तो क्रोध धीरे-धीरे शमित होता है। क्रोध का दमन नहीं करना होता, क्रोध का शमन करना होता है। क्रोध हमारे चित्त की एक विक्षिप्त अवस्था है। क्रोध में एक क्षण भर के लिए पागल हो जाते हैं। यह अस्थायी पागलपन है। इस पागलपन का कैसे त्याग करेंगे। यह क्रोध भीतर से उठता है। और जब उठता है तब हम होते कहाँ हैं।

क्रोध छोड़ा नहीं जाता। क्रोध समझा जाता है। छोड़ने के झंझट में पड़ने की बजाए इसे समझने की तरफ चलना चाहिए। इसके प्रति जागें, इसको पहचानें। इसकी फैली हुई जड़ों को खोदें। पहले से ही निर्णय न ले लें कि क्रोध बुरा है, अगर ऐसा निर्णय ले लिया तो इसे जान नहीं सकेंगे। जानने के लिए निर्णय मुक्त मत चाहिए।

एक बार भूल जाओ कि शास्त्रों ने कहा है कि क्रोध शत्रु है। भूल जाओ कि क्रोध जहर है। यह हमने कभी पहचाना नहीं। हमारी पहचान हो तभी हम इसे पकड़ सकते हैं। निर्णय शून्य होकर, निष्कर्ष-रहित होकर हमारे भीतर जब क्रोध उठे तो उसे देखें। जैसे आकाश में उड़ते बादल को कोई देखता है। न अच्छा न बुरा। न पक्ष, न विपक्ष। सिर्फ पहचाने कि क्या है? धीरे-धीरे जब क्रोध होगा तभी हमारी आँखें खुलेगी। धीरे-धीरे क्रोध के आने के पहले उसकी हल्की सरसराहट मालूम होगी और हमारी आँखें खुलेगी। अन्ततः सरसराहट भी नहीं होगी, कोई दूसरा व्यक्ति स्थिति पैदा करेगा, गाली देगा, अपमान करेगा, उसके गाली और अपमान करते ही हम जान लेंगे कि स्थिति मौजूद है। अगर मैं मूर्च्छित हो जाऊँ तो क्रोध होगा। अगर मैं सजग रहूँ, होशपूर्ण रहूँ, अगर यह दीपक होश का जलता रहे तो क्रोध नहीं होगा। होश में क्रोध विसर्जित हो जाता है, जैसे कि प्रकाश में अंधेरा नहीं होता है। हमें क्रोध को नहीं संघ को हमारी रग-रग में समाना है, सामाजिक भाव को रग-रग में समाना है, परमतत्त्व की प्राप्ति की आकांक्षा को रग-रग में समाना है। ●

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

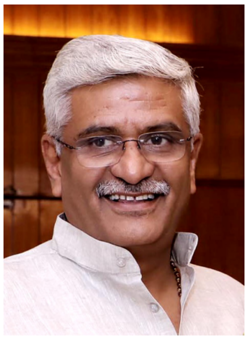

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत

(महरोली) को भारत सरकार में

केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

प्रेम सिंह बनवासा

BNB

ॐ

श्री योगेश्वर छात्रावास

कुचामन सिटी

विशेषताएं

1. कक्षा 6 से 12 वीं तक के विद्यार्थियों हेतु सीमित स्थान ।
2. अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या ।
3. शुद्ध, पौष्टिक एवं सात्विक आहार ।
4. सभी प्रमुख शिक्षण संस्थाओ के समीप स्थित ।
5. स्वाध्याय हेतु निःशुल्क लाईब्रेरी सुविधा ।

जिम्मेदारी हमारी विश्वास आपका

संम्पर्क सूत्र :

9772097087, 9799995005, 8769190974

SBI बैंक के पास, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

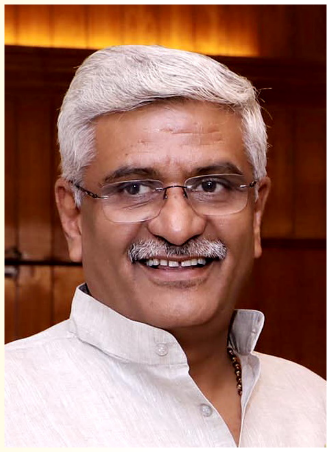

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत

(महरोली) को भारत सरकार में

केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

समस्त स्वयंसेवक

जुलाई, सन् 2024
वर्ष : 61, अंक : 07

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्...

....

....

श्री संघशक्तिप्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कोर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष -6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक राजेंद्र सिंह राठौड़। Email : sanghshakti@gmail-com | Website : www-shrikys-org